"बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, आपका त्याग भी बड़ा होना चाहिए..."

yashbharat.co.in
हर वक्त की ताजा खबरों के लिए विजिट करें

यश भारत

नये जमाने के साथ..

● वर्ष- 17 अंक 188- ●जबलपुर ● मंगलवार, 8 अगस्त, 2023 ● मूल्य- 2 रुपए ● पृष्ठ-8 ● अधिक श्रावण कृष्ण पक्ष 7 ● विक्रम संवत् 2080 शके 1935

भारतीय हॉकी टीम का कमाल पेज 7

आज का मौसम

आज सुबह का तापमान 24.0 डिग्री

दोपहर 12 बजे तक 29.0 डिग्री

बारिश के आसार

» न्यूज गैलरी

हरियाणा के पूर्व सीएम आज नूंह जाएंगे

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

हरियाणा के नूंह जिले में हिंसा के बाद हालात अब धीरे-धीरे सामान्य होते दिख रहे हैं। नूंह के पड़ोसी जिलों में लगी पाबंदियां हटने लगी हैं। गुरुग्राम-रेवाड़ी में हिंसा के बाद लगाई गई धारा 144 हटा दी गई है, लेकिन नूंह में कर्फ्यू और नेटबंदी जारी है। आज मंगलवार को कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा और कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष चौधरी उदयभान के नेतृत्व में जायजा लेने आएगा। वहीं हिंसा के बाद शुरू हुई बुलडोजर कार्रवाई को पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट ने रोक दिया है। हाईकोर्ट का आदेश आते ही डिप्टी कमिश्नर धीरेंद्र खड़गटा ने तुरंत अधिकारियों को कार्रवाई करने से मना किया। सरकार की डिमोलिशन ड्राइव का हाईकोर्ट ने सुओ-मोटो लिया था। पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट की जस्टिस गुरमीत सिंह संधावालिया ने रोक के आदेश दिए।

आर्टिकल 370 पर सुप्रीम कोर्ट में आज फिर सुनवाई

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाने के फैसले को चुनौती देने वाली 23 याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में आज फिर सुनवाई होगी। सुनवाई करने वाले पांच जजों की बैंच में में चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस एस के कौल, जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस सूर्यकांत शामिल हैं। 3 अगस्त को हुई सुनवाई में याचिकाकर्ताओं के वकील कपिल सिब्बल ने दलील दी थी कि आर्टिकल 370 को छेड़ा नहीं जा सकता। इसके जवाब में जस्टिस खन्ना ने कहा कि इस आर्टिकल का सेक्शन (ब) ऐसा नहीं कहता। इसके बाद सिब्बल ने कहा, च्मैं आपको दिखा सकता हूं कि आर्टिकल 370 स्थायी है। आर्टिकल 370 पर सुप्रीम कोर्ट में 3 साल बाद सुनवाई हो रही है। इससे पहले, 2020 में 5 जजों की संवैधानिक बेंच ने इस मामले की सुनवाई की थी। तब कोर्ट ने कहा था कि हम मामला बड़ी संवैधानिक बेंच को ट्रांसफर कर रहे हैं।

स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले पर PM मोदी की गरज सुनेंगे अमेरिकी सांसद

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

अमेरिकी सांसदों का एक द्विदलीय समूह 15 अगस्त को लाल किले पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन को सुनने के लिए भारत आ रहा है। द्विदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व भारतीय-अमेरिकी सांसद रो खन्ना और सांसद माइकल वाल्ट्ज कर रहे हैं। बता दें, दोनों अमेरिकी सदन में देश विशेष के सबसे बड़े द्विदलीय गठबंधन च्कांग्रेसनल कॉकस ऑन इंडिया एंड इंडियन अमेरिकन्सज्के सह-अध्यक्ष हैं।अमेरिका के सांसद लाल किले का दौरा करेंगे, जहां प्रधानमंत्री भारत के स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्र को संबोधित करेंगे। इसके अलावा यह लोग हैदराबाद, मुंबई और नई दिल्ली में व्यापार, तकनीकी, सरकार और बॉलीवुड से जुड़े लोगों से मुलाकात करेंगे। साथ ही महात्मा गांधी को समर्पित ऐतिहासिक स्मारक राजघाट का दौरा करेंगे।

लोकसभा में मणिपुर हिंसा को लेकर जमकर हुआ हंगामा

पीएम बोले- विपक्ष आशंकाओं से भरा इसीलिए अविश्वास प्रस्ताव लाए

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को संसद में भाजपा संसदीय दल की मीटिंग की। सूत्रों के मुताबिक, उन्होंने कहा- विपक्ष आशंकाओं से भरा हुआ है। विपक्ष यह बात दिखाने के लिए ही अविश्वास प्रस्ताव लेकर आया। कुछ लोग कह रहे थे कि 2024 से पहले राज्यसभा में वोटिंग सेमीफाइनल है। उन पार्टी सांसदों का शुक्रिया, जिन्होंने यह सेमीफाइनल जीत लिया। अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा से पहले ढ्ढ.हृ.ष्ठ.ढ्ढ. गठबंधन के नेताओं ने भी बैठक की। इस पर लोकसभा में बहस के दौरान रणनीति पर चर्चा की गई। कांग्रेस नेता राहुल गांधी, जिनकी सांसदी एक दिन पहले ही बहाल की गई है। वो अविश्वास प्रस्ताव पर बहस की शुरूआत करेंगे।

12 घंटे अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा होगी, ड्डछ्वक्क को 7 और कांग्रेस को सवा घंटे मिले

न्यूज एजेंसी ह्रढ्ढ ने सूत्रों के हवाले से बताया कि अविश्वास प्रस्ताव पर लोकसभा में 12 घंटे चर्चा होगी। भाजपा को करीब 7 घंटे का वक्त दिया गया है और कांग्रेस को सवा घंटे का। सूत्रों के मुताबिक, YSRCP, शिवसेना, JDU, BJD, BSP, BRS और लोजपा को 2 घंटे का वक्त दिया गया है। सभी पार्टियों के सांसदों की संख्या को ध्यान में रखते हुए उन्हें 2 घंटे में से चर्चा की टाइमिंग अलॉट की जाएगी। एक घंटे 10 मिनट का वक्त दूसरी पार्टियों और इंडिपेंडेंट सांसदों को दिया गया है। 8 और 9 अगस्त को ये सभी लोग अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 10 अगस्त को जवाब दे सकते हैं।

राज्यसभा में चिल्लाने लगे अस्ह्र सांसद डेरेक ओ ब्रायन, सभापति ने कर दिया सस्पेंड

राज्यसभा में मणिपुर चर्चा को लेकर हंगामा हो रहा था। इसी बीच डेरेक ओ ब्रायन खड़े होकर कहने लगे कि मणिपुर पर चर्चा होनी चाहिए। सभापति ने उनसे शांत रहने को कहा। वह नहीं माने तो धनखड़ भी नाराज हो गए। उन्होंने जोर से डांटा। तभी पीयूष गोयल उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ले आए और उन्हें राज्यसभा से सस्पेंड कर दिया गया। इसके तुरंत बाद सदन की कार्यवाही भी दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई थी। बता दें कि आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह को भी हंगामे की ही वजह से पूरे मानसून सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया था।

अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा जारी

मणिपुर हिंसा मामले में विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर लोकसभा में चर्चा हो रही है। लोकसभा स्पीकर ने इस बहस के लिए 17 घंटे का वक्त तय किया है। लोकसभा में आंकड़ों के लिहाज से सरकार को कोई खतरा नहीं है, लेकिन इस अविश्वास प्रस्ताव से उसकी यह जिद पूरी जाएगी ।

OMG-2 की कास्ट को महाकाल के पुजारियों ने भेजा नोटिस

भोपाल ● यशभारत
yashbharat.co.in

फिल्म ओह माय गॉड (OMG-2) की कास्ट को महाकाल मंदिर के पुजारियों ने लीगल नोटिस भेजा है। उनका कहना है कि फिल्म में भगवान शिव का रूप गलत तरीके से दिखाया गया है। उन्हें बाजार में दुकान से कचोरी खरीदते हुए बताया गया है। यह भगवान शिव के श्रद्धालुओं को आहत करने वाला है। OMG-2 11 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होना है। सेंसर बोर्ड ने फिल्म को सर्टिफिकेट दिया है। यानी इसे 18 साल से कम आयु के लोग नहीं देख पाएंगे। इस पर महाकाल मंदिर के पुजारियों का कहना है कि ऐसा प्रतीत होता है कि इस फिल्म में अश्लील सीन हैं। महाकाल मंदिर के साथ इस तरह के दृश्य स्वीकार्य नहीं हैं। ये नोटिस फिल्म निर्देशक अमित राय, निर्माता विपुल शाह व चंद्रप्रकाश द्विवेदी, एक्टर अक्षय कुमार और सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष प्रसून कुमार जोशी को भेजा गया है। अखिल भारतीय पुजारी महासंघ की ओर से हाईकोर्ट के वकील अभिलाष व्यास ने नोटिस भेजा है।7 अगस्त को भेजे गए नोटिस में कहा गया है कि लेटर मिलने के 24 घंटे के अंदर अपमानजनक दृश्यों को हटाया जाए।

भगवान शिव को कचोरी खरीदते हुए दिखाने पर आपत्ति

फिल्म पुष्पा की तर्ज पर सागौन की तस्करी

नदी में बहाकर ले जाई जा रही थीं लकड़ियां वन विभाग ने पकड़ा

भोपाल ● यशभारत
yashbharat.co.in

मध्यप्रदेश के दमोह जिले में फिल्म पुष्पा की तर्ज पर सागौन की लकड़ी की तस्करी करने का मामला सामने आया है। यहां व्यारमा नदी में लकड़ियां बहाकर ले जाई जा रही थीं, जिसे वन विभाग ने हाल ही में पकड़ा है। दमोह में वन माफिया के द्वारा अनोखे तरीके से सागोन की तस्करी की जा रही है। जिले की सबसे बड़ी व्यारमा नदी में सागौन की लकड़ी को बहाते हुए माफिया ले जा रहे थे, जिसे वन विभाग ने जब्त कर लिया है। हालांकि आरोपी नहीं पकड़े गए जिनकी तलाश की जा रही है। दमोह जिले के वन परिक्षेत्र सगौनी अंतर्गत रेंजर अखलेश चौरसिया को मुखबिर से सूचना मिली थी कि बर्रट के पास मेहगुवा गांव में कुछ लोग सागौन के बड़े-बड़े लट्ठों को रस्सी से बांधकर व्यारमा नदी से बहाकर 15 किमी दूर तक ले जा रहे हैं। सूचना प्राप्त होने पर डीएफओ एमएस उइके को सूचना दी गई और उनके निर्देश पर टीम गठित कर वनकर्मी नदी के पास पहुंचे। जहां मौके से सागौन के छह लट्ठे जब्त किए गए, जिसे वन चौकी सलैया में रखा गया है। बर्रट्ट, जोगी डाबर, ग्वारी और मादो गांव में आरोपियों की तलाश की जा रही है। कुछ लकड़ी दो से तीन महीने पुरानी बताई जा रही है और कुछ लगभग पांच दिन पुरानी कटी हुई लग रही है।

मुख्यमंत्री के पास तेजस्वी आते रहे हैं, मगर राजद अध्यक्ष आए तो चर्चा गरम

पटना ● एजेंसी
yashbharat.co.in

कांग्रेस के नंबर वन नेता राहुल गांधी को दिल्ली में डिनर पर बुलाने वाले राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मिलने सीएम आवास पहुंचेंगे, ऐसी उम्मीद नहीं थी। क्या रहा मुद्दा, अब इसकी चर्चा गरम है।मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राजनीति के बड़े भाई लालू प्रसाद यादव से मिलने राबड़ी आवास जाते रहे हैं। उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव भी राजनीति के अपने चाचा नीतीश कुमार से मिलने आते रहे हैं। विपक्षी एकता की पटना में हुई पहली बैठक से पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बीमार पड़े थे तो राष्ट्रीय जनता दल अध्यक्ष लालू प्रसाद उन्हें देखने सीएम हाउस 1 अणे मार्ग आए थे।

अंजू पर मेहरबान पाकिस्तान, एक साल का दिया एक्सटेंशन वीजा

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

अलवर जिले के भिवाड़ी से पाकिस्तान गई अंजू ने पाकिस्तान में अपने दोस्त नसरुल्लाह के साथ निकाह कर लिया है। इसके लिए अंजू के पति नसरुल्लाह ने पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय में वीजा एक्सटेंशन के लिए प्रार्थना पत्र दिया था। इसमें एक साल का वीजा बढ़ गया है।

नसरुल्लाह ने दी जानकारी

पाकिस्तान की मीडिया से बात करते हुए नसरुल्लाह ने बताया, वह विदेश मंत्रालय में वीजा एक्सटेंशन के लिए आए हैं और उनकी पत्नी अंजू के लिए यह वीजा एक्सटेंशन का प्रार्थना पत्र दिया है और एक साल का एक्सटेंशन मिल गया है। विदेश मंत्रालय ने जो भी कागजात मांगे, उनकी पूर्ति करके दे दिया गया है। विदेश मंत्रालय उनका पूरा सहयोग कर रहा है। जो भी डॉक्यूमेंट मांगे थे, वह पूरे करके दे दिए हैं। नसरुल्लाह ने बताया कि 10 दिन में पूरी कानूनी प्रक्रिया पूरी कर एक साल का एक्सटेंशन का वीजा का पत्र दे दिया जाएगा। 23 जुलाई को भारत से अपने पति अरविंद और दो बच्चों को छोड़कर पाकिस्तान पहुंची अंजू ने अपने पाकिस्तानी मित्र नसरुल्लाह के साथ निकाह कर लिया। पहले तो यह बताया जा रहा था कि अंजू को दो महीने का वीजा एक्सटेंशन दिया गया है। लेकिन अब अंजू के कथित पाकिस्तानी शौहर नसरुल्लाह ने बताया है कि उन्हें एक साल का वीजा एक्सटेंशन मिल गया है। बताते चलें, 23 जुलाई को भारत से अपने पति अरविंद और दो बच्चों को बिना बताए पाकिस्तान पहुंची अंजू ने अपने पाकिस्तानी दोस्त नसरुल्लाह के साथ निकाह कर लिया था। वहीं, अंजू के पति अरविंद ने अपनी पत्नी और उसके फेसबुक मित्र नसरुल्लाह के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करवाई है। अरविंद ने दावा किया था कि अभी तक दोनों का तलाक नहीं हुआ है, इसलिए वह सीमा पार के आदमी से शादी नहीं कर सकती है।

रूस के मिसाइल हमले में यूक्रेन के 5 लोगों की मौत 31 घायल

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

रूस और यूक्रेन के बीच जारी जंग को एक साल से भी ज्यादा समय हो चुका है। दोनों देशों के बीच इस जंग को शांत कराने के लिए कई देश प्रयासरत हैं। इसी क्रम में सऊदी अरब के जेद्दाह में रूस-यूक्रेन युद्ध का शांतिपूर्ण समाधान ढूंढने पर चर्चा चल रही है। बावजूद इसके दोनों देश एक दूसरे पर लगातार हमले भी कर रहे हैं। इस बीच, सामने आाया है कि पूर्वी यूक्रेन के शहर पोक्रोव्स्क में रूस ने मिसाइल हमले किए हैं। शहर की एक आवासीय इमारत को निशाना बनाकर किए गए इस हमले में पांच लोगों की मौत हो गई वहीं, 30 से ज्यादा लोग घायल हो गए। जेलेंस्की ने वीडियो शेयर कर कही यह बातयूक्रेन ने इस हमले की निंदा की है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने कहा कि मॉस्को ने एक साधारण आवासीय इमारत पर हमला किया है। उन्होंने सोवियत-युग की एक पांच मंजिला इमारत का फुटेज भी जारी किया है। इस इमारत की ऊपरी मंजिल नष्ट हो गई है। हमले के बाद बचाव अभियान जारी है। अपने पोस्ट नें जेलेंस्की ने लिखा है कि मलबा अभी भी साफ किया जा रहा है और च्खोज एवं बचाव अभियान जारी है।

ज्योति मौर्य और आलोक को एक और नया नोटिस

IPS मनीष से अफेयर और इस मामले में बढ़ेगी परेशानी!

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

प्रेम प्रसंग एवं भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरीं पीसीएस अधिकारी ज्योति मौर्या और उनके पति आलोक से इसी सप्ताह पूछताछ की जाएगी। इस बाबत उन्हें नोटिस भेज दिया गया है। साथ ही दस्तावेज खंगाले जा रहे हैं। आलोक ने ज्योति के खिलाफ कई गंभीर आरोप लगाए हैं। इसमें भ्रष्टाचार का मामला भी है। आलोक ने एक डायरी भी दी है, जिसमें गलत तरीके से लेनदेन का ब्योरा होने का दावा किया जा रहा है। इस मामले की जांच अपर आयुक्त प्रशासन की अध्यक्षता में गठित तीन सदस्यीय कमेटी कर रही है। मामले में जांच कमेटी ने संबंधित दस्तावेज मंगा लिए हैं। उनका अध्ययन किया जा रहा है। इसी क्रम में ज्योति और आलोक से इसी सप्ताह पूछताछ की जाएगी। उनसे आमने-सामने भी पूछताछ की जाएगी। एक अफसर के अनुसार, ज्योति के सामने ही आरोप पत्रों का पिटारा खोले जाने की तैयारी है। उन्हें जांच कमेटी के सामने उपस्थित होने के लिए सोमवार को नोटिस भेज दिया गया। हालांकि, आलोक का कहना है कि शाम तक नोटिस नहीं मिला था।

नोटिस ने बढ़ाई ज्योति मौर्य की मुश्किलें

ज्योति मौर्य को नोटिस जारी कर संपत्ति का ब्यौरा मांगा गया है। बताया जा रहा है कि कमिश्नर कार्यालय में वीडियो कैमरे की निगरानी में एसडीएम ज्योति मौर्य का बयान दर्ज किया जाएगा। ऐसे में एसडीएम अधिकारी ज्योति मौर्य की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। पीसीएस अधिकारी के पति आलोक मौर्य का आरोप है कि ज्योति मौर्य ने पद का दुरुपयोग कर करोड़ों का अवैध लेनदेन किया है। इस पैसे से उन्होंने कई जगह पर संपत्ति बनाई है। कई सेक्टर में निवेश भी किया है। लेनदेन के समर्थन में वह लिखापढ़ी के कागजात भी सौंपे गए हैं, जिसमें किस अधिकारी से कितना लेने का ब्यौरा दर्ज किया गया था।शासन के निर्देश पर प्रयागराज के मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत को इस प्रकरण की जांच सौंपी गई है। मंडलायुक्त ने अपर आयुक्त प्रशासन अमृतलाल बिंद, एडीएम प्रशासन हर्षदेव पांडेय और एसीएम प्रथम जयजीत कौर की कमेटी गठित कर जांच शुरू करा दी है।

एक दो दिन में आतंकी हमला होगा

महाराष्ट्र मंत्रालय में फोन कर 61 साल के शख्स ने दी धमकी, गिरफ्तार

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

पुलिस ने बताया कि कांदिवली पुलिस ने 61 साल के एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान प्रकाश किशनचंद खेमानी के रूप में हुई है। आरोपी को आज कोर्ट में पेश किया जाएगा। मुंबई पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने बीती रात महाराष्ट्र मंत्रालय को फोन कर धमकाते हुए कहा कि एक दो दिन में मंत्रालय में आतंकी हमला होगा। पुलिस ने बताया कि कांदिवली पुलिस ने 61 साल के एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान प्रकाश किशनचंद खेमानी के रूप में हुई है।

फैसला — प्रधानमंत्री आवास योजना में मकान बनने की राह भी खुल जाएगी

जिनके पास भूखंड नहीं, उन्हें मिलेगा फ्री प्लाट-सीएम

भोपाल ● यशभारत
yashbharat.co.in

मध्य प्रदेश सरकार ने हर जरूरतमंद परिवार को मकान के लिए फ्री जमीन उपलब्ध कराने का एक ऐतिहासिक फैसला किया है. प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इसकी जानकारी देते हुए बताया कि राज्य सरकार उन परिवारों को निशुल्क प्लाट देगी, जिनके पास भूखंड नहीं है। अब उनके पास आवास पट्टा होगा, राज्य सरकार पट्टा जारी करेगी. इससे प्रधानमंत्री आवास योजना में मकान बनने की राह भी खुल जाएगी और बाकी स्कीम्स का फायदा भी मिल सकेगा। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री आवासीय भू-अधिकार योजना में ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी जमीन पर प्लाट आवंटित करने के दिशा-निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

सरकारी स्कीम और बैंक से मिल सकेगा लोन

मुख्यमंत्री ने बताया कि रिहायसी प्लाट मिलने से ऐसी फैमिली को सरकारी स्कीम्स के साथ-साथ- जरूरत पर बैंक से लोन भी मिल सकेगा. राज्य सरकार की ओर से हर ग्राम पंचायत में आबादी क्षेत्र की जमीन पर पात्र परिवारों को आवासीय प्लाट उपलब्ध करवाने के लिए मुख्यमंत्री आवासीय भू-अधिकार योजना शुरू की गई है।

फ्री प्लॉट किसे मिलेगा

स्कीम में अधिकतम 60 वर्गमीटर का प्लाट आवंटित किया जाएगा. इस स्कीम में फैमिली से मतलब पति-पत्नी और उनके अविवाहित पुत्र-पुत्री से होगा. फ्री प्लाट के लिए आवेदन करने के लिए वही फैमिली पात्र होंगी, जो संबंधित गांव के निवासी हों. प्लॉट के लिए ऑनलाइन SAARA पोर्टल के जरिए अप्लाई करना होगा. पात्र आवेदकों को पति एवं पत्नी के ज्वाइंट नाम से उपलब्धता के आधार पर भू-स्वामी अधिकार-पत्र दिए जाएंगे. प्लाट के लिए कोई प्रीमियम देय नहीं होगा. इस स्कीम में अप?लीकेशन मिलने से लेकर उसकी मंजूरी तक की मॉनिटरिंग रेवेन्यू कमिश्नर की ओर से की जाएगी।

कौन नहीं होगा पात्र

ऐसी फैमिली जिनके पास रहने के लिए अपना मकान है या फैमिली के पास 5 एकड़ से अधिक जमीन है या जो फैमिली पब्लिक डिस्ट्रिब्यूशन सिस्टम (PDS) दुकान से राशन लेने के लिए पात्र नहीं है, उन्हें इस स्कीम का फायदा नहीं मिलेगा. इसके अलावा, अगर फैमिली का कोई भी मेम्बर इनकम टैक्स देता है या सरकारी नौकरी में है, तो भी वह इस स्कीम में आवदेन नहीं कर सकता है. वहीं, अगर स्कीम में अप्लाई करने वाले का नाम उस गांव में जहां वह प्लाट चाहता है, 1 जनवरी 2021 को वोटर लिस्ट में नहीं है, तो वह पात्र नहीं होगा।

बेटी बन गई पत्नी, लेखपाल की मौत के बाद पेंशन के लिए किया फर्जीवाड़ा

सरकार से 10 साल में लिए 12 लाख

नई दिल्ली ● एजेंसी
yashbharat.co.in

एटा के अलीगंज में लेखपाल के निधन के बाद सगी बेटी कागजों में उसकी पत्नी बन गई। करीब 10 साल तक पेंशन लेती रही। इस दौरान सरकार के करीब 12 लाख रुपये हड़प लिए। मुकदमा दर्ज होने के बाद पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर लिया है। उनकी पुत्री मोहसिना परवेज पत्नी फारुख अली पेंशन प्रपत्रों में अपना नाम साबिया बेगम पत्नी विजारत उल्ला खां दर्ज कराकर पेंशन प्राप्त करने लगी। इस संबंध में शिकायत मिलने पर पूर्व में रहे उपजिलाधिकारी मानवेंद्र सिंह ने मामले की जांच कराई। जांच में पाया गया कि मोहसिना ने पेंशन प्रपत्रों में हेराफेरी कर साबिया बेगम बनकर शासकीय धन का दुरुपयोग किया है। रजिस्ट्रार कानूनगो राजकपूर ने कोतवाली में एफआईआर दर्ज कराई। इस मामले में पुलिस ने महिला के विरुद्ध आरोप पत्र दाखिल कर दिया था। कोतवाली प्रभारी प्रेमपाल सिंह ने बताया कि आरोपी लंबे समय से फरार चल रही थी। पुलिस ने मोहसिना को सोमवार को गिरफ्तार कर लिया।

» न्यूज गैलरी

भजन शिरोमणि पं. शिब्बू दादा की स्मृति में भावांजलि कार्यक्रम 12 को

जबलपुर,यशभारत। भजन शिरोमणि पंडित शिवप्रसाद शुक्ल शिब्बू दादा की स्मृति में 12 अगस्त को शहीद स्मारक प्रेक्षागृह गोलबाजार में पुष्पांजलि, भावांजलि एवं स्वरांजलि कार्यक्रम का आयोजन शाम 6.45 बजे से किया गया है। स्व. शिब्बूदादा स्मृति आयोजन समिति एवं पाथेय संस्था के संयोजन में कार्यक्रम आयोजित होगा । संयोजन समिति में मिलन, मित्रसंघ, गुंजनकला सदन, कादम्बरी, वर्ता, त्रिवेणी परिषद्, गूंज, हिंदी लेखिका संघ, जागरण साहित्य समिति, प्रसंग, आभा साहित्य संघ, अनेकांत, अंतस, गीत पराग, हिंदी सेवा समिति, पीएमजी शिक्षा कला शोध समिति, अखिल भारतीय बुंदेली संस्कृति परिषद्, सनाढय संगम, ब्राहमण महासभा, सुप्रभातम,सत्यानंद योग केंद्र, विवधा कला सांस्कृतिक अकादमी शामिल है। उक्त जानकारी रविशंकर श्रीवास्तव ने दी है।

गढ़ा और तिलवारा के पुलिस कर्मियों के घर पर निकले दो सांप

जबलपुर,यशभारत। गढ़ा पुलिस क्वार्टर में रहने वाली रितु तिवारी के घर में दोपहर दो बजे एक सात फीट लंबा धामन प्रजाति का सांप निकलने से अफरा-तफरी मच गई। जिसके बाद परिजनों द्वारा सर्प विशेषज्ञ गजेंद्र दुबे को सूचना देकर बुलाया गया फिर गजेंद्र दुबे ने रेस्क्यू करके सांप को पकड़कर जंगल में छोड़ दिया। इसी तरह तिलवारा पुलिस थाने के पीछे पुलिस क्वार्टर में रहने वाली महिला आरक्षक रमा अहिरवार के कक्ष के पीछे आंगन में शाम पांच बजे एक चार फीट लंबा कील बैक चैकर्ट प्रजाति का सांप निकला जिससे हड़कंप मच गया। सर्प विशेषज्ञ के अनुसार ये दोनों सांप जहरीले नहीं थे।

बड़ी ओमती में लंगर का एहतेमाम

जबलपुर,यशभारत। बड़ी ओमती में लाल स्कूल के पास यंग मुस्लिम लंगर कमेटी की ओर से लंगर का आयोजन किया गया। मुस्लिम युवाओं की ओर से यह पहले वर्ष प्रयास रहा। मोहम्मद सुलतान अहमद, आयोजन कमेटी सदस्य ने बताया कि लंगर कार्यक्रम में देर रात तक सैकड़ों लोगों ने शिरकत की।

10 को एनएसयूआई करेगी कलेक्ट्रेट का घेराव

जबलपुर,यशभारत। नई शिक्षा नीति,बढ़ती बेरोजगारी, पटवारी भर्ती घोटाला, छात्र संघ चुनाव एव परीक्षाओं में हुए घोटाले के विरोध में जबलपुर एनएसयूआई के द्वारा कलेक्ट्रेट कार्यालय का घेराव 10 अगस्त को किया जाएगा। संगठन के जिलाध्यक्ष सचिन रजक ने बताया कि घेराव के दौरान एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष चौकसे , प्रदेश प्रभारी नितिश गौंड़ , प्रदेश उपाध्यक्ष कोविन्द सिंह ठाकुर सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रहेगी। अंजुमन स्कूल मालवीय चौक से प्रदर्शन यात्रा शुरू की जाएगी।

बाइक की टक्कर से अधिवक्ता घायल

जबलपुर,यशभारत। रांझी थानांतर्गत आनंद नगर सीओडी कॉलोनी मोड़ पर बाइक क्रमांक एमपी 20 एन व्ही 9690 के चालक ने दूसरी बाइक में सवार अधिवक्ता को टक्कर मारकर घायल कर दिया है। पुलिस ने रिपार्ट पर बाइक चालक के खिलाफ अपराध कायम कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। सांईधाम कॉलोनी मानेगांव निवासी रावेंद्र सिंह पटैल पेशे से अधिवक्ता है। वह सुबह कोर्ट जाने निकला था कि तभी आनंद नगर के पास रांग साइड से आ रही बाइक से उसे टक्कर मारकर घायल कर दिया।

नजदीकी गांव में दिया जा रहा आउट सोर्स के माध्यम से रोजगार

1532 करोड़ यूनिट विद्युत उत्पादन करने का साक्षी बना रानी अवन्ती बाई सागर जल विद्युतगृह बरगी

जबलपुर,यशभारत। रानी अवन्ती बाई सागर जल विद्युतगृह बरगी , स्थापना वर्ष 1988 से आज तक करीब 1532 करोड़ यूनिट विद्युत उत्पादन कर चुका है। इसकी दोनों इकाईयां अभी भी फुल लोड (45 मेगावाट) पर सफलतापूर्वक लगागार चल रही हैं। विद्युत गृह ने पिछले साल 427 मिलियन यूनिट का लक्ष्य समय से पूर्व हासिल किया था। दोनों यूनिट्स की उपलब्धता 88 प्रतिशत है, जो निर्धारित मानक से बेहतर है। जानकारी के अनुसार रानी अवन्ती बाई सागर जल विद्युत गृह बरगी से नजदीकी गांव बिजौरा को 24 घंटे निर्बाध जलापूर्ति दी जा रही है। इसके साथ ही आउट-सोर्सिंग के माध्यम से स्थानीय लोगों को रोजगार भी दिया जा रहा है। यह जानकारी बरगी पॉवर हॉउस के एसई विवेक बाझल ने दी।

पावर हाउस व रेस्ट हाउस के सौंदर्यीकरण का काम शुरू -

पावर हाउस एवं रेस्ट हाउस के सौंदर्यीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इसके अन्तर्गत पॉवर हाउस के अंदर आधुनिक कांफ्रेंस हाल, विभिन्न कक्षों का निर्माण तथा फर्नीचर खरीदने, लैन्डस्केपिंग ,रेस्ट हाउस के सभी कमरों का नवीकरण, लैंडस्केपिंग का कार्य शुरू किया जा रहा है। कर्मचारियों के लिये सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। स्क्रैप से मॉडल, कक्ष, पार्किंग शेड, ट्रीगार्डस बनाए जा रहे हैं। प्रकाश व्यवस्था को बेहतर बनाया जा रहा है।

15 अगस्त को पौधारोपण -एसई विवेक बाझल ने बताया कि हर वर्ष 15 अगस्त को मध्य प्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी लिमिटेड के प्रबंध संचालक मंजीत सिंह और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा वृहद स्तर पर पौधारोपण किया जाता है। इस वर्ष भी तैयारियां की जा रहीं हैं। रानी अवन्ती बाई सागर जल विद्युत गृह बरगी में अभी तक रोपित किए गए सभी पौधे सुरक्षित एवं पल्लवित हो रहे हैं।

35 वर्ष पूरे, नवीनीकरण प्रारंभ

विद्युत गृह को 35 वर्ष हो चुके हैं, इसके मददेनजर इसके नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण का कार्य शुरू हो चुका है। इसकी आर एल ए स्टडी पूरी हो गई है। डीपीआर बन रही है। इसके साथ-साथ एवीआर, गर्वनर, स्विच यार्ड उपकरण, सीओटू फायर फाइटिंग सिस्टम इत्यादि का नवीनीकरण पूर्ण हो चुका है। कन्ट्रोल, रिले पैनल बदलने का कार्य शुरू हो रहा है।

सुरक्षा-संरक्षा पर दिया जा रहा विशेष ध्यान,,,

एसई विवेक बाझल का कहना है कि विद्युत गृह में सुरक्षा एवं संरक्षा पर पूर्ण ध्यान दिया जा रहा है। जिसका नतीजा है कि अभी तक वहां कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई है। इसके साथ ही उन्होनें बताया कि कर्मचारियों को लगातार प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिससे विद्युतगृह इस वर्ष भी उत्पादन लक्ष्य सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकेगा।

जलप्लावन की समस्या को हटाने तोड़े जाएंगे शहर के कवर्ड नाले: महापौर

एक वर्ष का कार्यकाल पूरा होने पर कहा... जो कहां था वो किया है और जो कहूंगा वो करूंगा

जबलपुर,यशभारत। संस्कारधानी का हर एक नागरिक हमारे लिए ईश्वर तुल्य है, जबलपुर विकास की ओर अग्रसर है जल्द ही शहर महानगर का स्वरूप लेगा। मैंने चुनाव के पहले जो कहा वो किया और जो कहूंगा वो करूंगा। तिलवारा घाट के पास गांधी स्मारक में देश की आन-बान-शान का प्रतीक प्रदेश का सबसे ऊंचा 75 मीटर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा की स्थापना का कार्य प्रगति पर हैं। नगर निगम सीमा के 15 करोड़ की राशि के 67 उद्यानों का कार्य शुरू हो चुका है। रोजगार के लिए शहर में 500 मिल्क पार्लर खोले जा रहे हैं। ये सारी बातें महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू ने एक वर्ष के कार्यकाल पूरे हाने के बाद आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान कही।

नर्मदा में नहीं मिलेंगा गंदा पानी

इस दौरान महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू ने यह भी कहा कि माँ नर्मदा में गंदे नाले को मिलने से रोकने के लिए 17 करोड़ की लागत से एसटीपी लगाने का काम शुरू कर दिया गया है। जो कि दिसंबर माह तक पूरा हो जाएगा। जलप्लावन के मुख्य कारण शहर के कवर्ड नालों को तोड़ने का काम शुरू होगा जिससे लोगों को जलप्लावन की परेशानी न जूझना पड़े।

नर्मदा जल हर घर पहुंचाने होगा काम

शहर में चल रहे 506 करोड़ रुपए के सड़क, नाली और अन्य विकास कार्यों के बारे में भी महापौर ने पत्रकारों को बताया। हर घर में नर्मदा जल पहुँचाने हेतु अमृत फेज-टू परियोजना स्वीकृत हो गई है। शहर को स्वच्छता में अव्वल लाने के हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवसर पर विधायक लखन घनघोरिया, विनय सक्सेना, संजय यादव, एमआईसी सदस्य एवं समस्त पार्षदगण उपस्थित रहे।

शहर में बढ़ रहे अपराधों पर अंकुश की मांग को लेकर कांग्रेसियों ने घेरा एसपी कार्यालय

जबलपुर,यशभारत। जबलपुर में लगातार बढ़ रहे अपराधों के खिलाफ और इन अपराधों पर रोक की मांग को लेकर केंट कांग्रेस के साथ मिलकर बड़ी संख्या में कांग्रेसियों ने एसपी ऑफिस का घेराव किया और प्रदर्शन किया। इस दौरान बड़ी संख्या में पहुंचे प्रदर्शनकारियों ने भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। केंट बोर्ड पूर्व उपाध्यक्ष के नेतृत्व में प्रदर्शनकारियों ने एसपी टीके विद्यार्थी के नाम पर एएसपी प्रियंका शुक्ला को ज्ञापन सौंपा और मांग की कि शहर में लगातार बढ़ रहे अपराधों पर अंकुश लगाया जाए और साथ ही अपराधियों को ऐसी सजा दिलवाई जाए जिससे अपराधी किसी भी वारदात को अंजाम देने से पहले पुलिस की कार्रवाई से डरे। केंट बोर्ड पूर्व उपाध्यक्ष अभिषेक चौकसे ने कहा कि अगर पुलिस द्वारा जल्द उनकी मांगों पर निराकरण नहीं किया गया तो आने वाले दिनों में जबलपुर पुलिस, भाजपा सरकार के पुतले दहन किए जाएंगे और जरूरत पड़ी तो अपराधों के खिलाफ जबलपुर बंद भी कराया जाएगा।

खारीघाट में पसरी गंदगी को हटाने क्षेत्रीयजन मजबूर

सूचना के बाद भी जिम्मेदार नहीं दे रहे ध्यान

जबलपुर,यशभारत। ग्वारीघाट स्थित खारी घाट में इन दिनों चारों तरफ गंदगी का अंबार लगा हुआ है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग अस्थि विसर्जन के लिए यहां आते हैं और कहीं भी कुछ भी फेंककर चले जाते हैं। घाट में सफाई कराने की मांग क्षेत्रीय पुरोहितों व लोगों ने कई बार नगर निगम प्रशासन को सूचना दी लेकिन आज तक यहां किसी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं की गई है। आलम यह रहता है कि क्षेत्रीय लोग खुद घाट की सीढ़ियों पर साफ-सफाई करने मजबूर हो रहे हैं। ऐसे में क्षेत्रीयजन नगर निगम प्रशासन एवं ग्वारीघाट वार्ड के पार्षद को कोसते नजर आ रहे हैं।

संविदा अधिकारी-कर्मचारियों को नियमित करने महापौर को सौंपा मांगपत्र

जबलपुर,यशभारत। नगर निगम में संविदा पर कार्यरत अधिकारी-कर्मचारियों को नियमित किये जाने की मांग को लेकर जबलपुर मध्यप्रदेश अनुसूचित जाति-जनजाति अधिकारी कर्मचारी संघ अजाक्स ने महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू और नेता प्रतिपक्ष कमलेश अग्रवाल को मांग पत्र सौंपा। कर्मचारी संघ अजाक्स के पदाधिकारियों ने बताया कि गत दिवस मध्यप्रदेश शासन सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय के द्वारा राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में संविदा पर नियुक्त अधिकारियों/कर्मचारियों के संबंध में दिशा-निर्देश जारी किये गये। उपरोक्त दिशा निर्देशों का पालन शीघ्र अतिशीघ्र किया जाए इसलिए मांगपत्र सौंपा गया है। इस मौके पर अजय सोनकर, राम दुबे, योगेश चौधरी, राकेश समुन्द्रे, कपिल दुबे, ऐबू डेविड, कालूराम सोलंकी, बी. सत्यनारायण, प्रशांत राव, व्यंकट, यंगटैया, विजय, अमित बाल्मीक, आदम, जसवंत करोसिया, नारायण, चन्द्रशेखरकांत, अजय बिहूनिया, राजेश गिरानिया, महेश सुमन सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

दायर पिटीशन पर हाईकोर्ट ने जारी किया आदेश..

5 करोड़ की संपत्ति कुर्क करने एनएचएआई के कार्यालय पहुंची प्रशासन की टीम

जबलपुर,यशभारत। जमीन के भू-अर्जन के मामले पर हाईकोर्ट एवं जिला अदालत के आदेश के बाद प्रशासन की टीम पुलिस के साथ सिविल लाइंस स्थित भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण कार्यालय में कुर्की कार्रवाई के लिए पहुंची। इस संबंध में पीड़ित रोहित गुप्ता ने बताया कि करीब 7 साल पहले वर्ष 2016 में कटियाघाट स्थित उसकी करीब 1 एकड़ 52 डिसमिल जमीन का एनएचआईए, एमपीआरडीसी और शासन ने भूअर्जन किया था जिसकी मुआवजा राशि करीब 5 करोड़ 30 लाख रुपए नहीं दी जा रही थी। इसको लेकर हाईकोर्ट के समक्ष एक पिटीशन दायर की गई थी। उक्त मुआवजे की राशि अब करीब 10 करोड़ रुपए के आसपास पहुंच गई है। रोहित के अधिवक्ता अधिवक्ता प्रणय पाठक ने बताया कि पिटीशन का फैसला करते हुए कोर्ट ने एनएचएआई यानि नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया की 5 करोड़ की संपत्ति कुर्क करने के आदेश जारी कर दिए थे जिसके बाद प्रशासन की टीम कार्यालय पहुंची थी।

कटियाघाट में जमीन के भू-अर्जन के मुआवजे का मामला

पशुओं के प्रति सहानुभूति बनी रहे का संदेश देने दिखाई गई फिल्म

एनिमल सेव इंडिया ने पशु अधिकार मूवी का किया आयोजन

जबलपुर,यशभारत। एनिमल सेव इंडिया के द्वारा पशु अधिकार और करुणा पर आधारित फिल्म मां का दूध का चित्रण चित्रगुप्त मंदिर कांचघर चुंगी चौकी जबलपुर में किया गया। इस फिल्म का उद्देश्य पशु अधिकार की ओर लोगों को जागरुक कर पशुओं पर दया और सहानुभुति व्यवहार की ओर ले जाना था। इस दौरान क्षेत्रीय पार्षद संजय साहू ने फिल्म की समीक्षा करते हुये कहा कि यह फिल्म समाज के लोगों के बीच पशुओं के प्रति स्नेह , दया ,करुणा को अवश्य जगाएगी । इसके बाद प्लांट बेस्ड ट्री यानि पौधा आधारित संधि के माध्यम से जन जन तक पौधा लगाएं का संदेश पहुचाया गया । पर्यावरण को भी सुरक्षित करने के उद्देश्य से पौधरोपित कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

मुंबई से आए वक्ता ने विद्यार्थियों को दी अहम जानकारी

महाकोशल कॉलेज में निःशुल्क वित्तीय साक्षरता एवं निवेशेक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जबलपुर,यशभारत। शासकीय महाकोशल कॉलेज में स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन के अंतर्गत वित्तीय साक्षरता एवं निवेशक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद प्रो. अमोघ गोठोस्कर, मुंबई स्टॉक एक्सचेंज ने विद्यार्थियों को साक्षरता की आवश्यकता विषय पर जानकारी देते हुये कहा कि युवाओं के लिए वित्तीय साक्षरता उनके कॅरियर एवं भविष्य के लिए आवश्यक है । इसके साथ ही उन्होनें निवेश जागरूकता पर कहा कि युवा ही देश का भविष्य है। निवेश करते हुए हमें अपनी क्षमता लाभ हानि का विस्तार पूर्वक अध्ययन करना चाहिए। वहीं प्रो. अरुण शुक्ल, संभागीय नोडल अधिकारी ने कहा कि विद्यार्थी यदि बीमा कंपनियों एवं शेयर ब्रोकर के रुप में अपने आपको स्थापित करना चाहते है तो उन्हें वित्तीय साक्षरता प्राप्त करनी होगी। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ.ए.सी.तिवारी, डॉ. शिवचंद्रे वल्के, डॉ.प्रियंका साहू, डॉ. महेन्द्र कुमार कुशवाहा, डॉ. नीलिमा, डॉ. शैलेन्द्र भवदिया के साथ महाविद्यालय के लगभग 65 छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

ACST Academy of Computer Science & Technology
माखनलाल चतुर्वेदी रा.प.सं. विश्वविद्यालय
प्रदेश का अग्रणी संस्थान SINCE 1996
DCA BCA CPCT PGDCA M.Sc.(CS) Tally
चौपाटी के पास, सिविक सेंटर, जबलपुर मो: 4007077, 9993030707
जुलाई 2023 सत्र में 40% तक की विशेष छूट

त्रिभुवनदास मालपाणी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मिलौनीगंज, जबलपुर
Nursery to Class XII (English & Hindi Medium)
विद्यालय की विशेषताएं
● छात्र/छात्राओं के अध्ययन के लिए प्रोजेक्टर प्रत्येक कक्षा में, अनुभवी शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य।
● छात्र/छात्राओं के लिये भौतिक/रसायन/जीव विज्ञान/आईपी कम्प्यूटर प्रयोग शाला, अटल टिंकरिंग लैब।
● छात्र/छात्राओं के लिये कक्षाओं की सुविधा
● विद्यालय द्वारा नेशनल स्तर तक जूडो के खिलाड़ी ने स्वर्ण प्राप्त किये।
● बोर्ड कक्षाओं का शत- प्रतिशत परीक्षाफल।
● खेलकूद में छात्र/छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति सुविधा 10000/-, 8000/-6000/- प्रतिवर्ष
● अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों हेतु शासन द्वारा छात्रवृत्ति सुविधा।
प्रवेश प्रारंभ 2023-24
प्रातःपाली 7.30 से 12.00 पहली से 12वीं अंग्रेजी माध्यम
दोपहर पाली 12.20 से 5.10 6वीं से 12वीं हिन्दी माध्यम
संपर्क 9009505955,0761-4016415

केला चिप्स AK's चना जोर गरम
रोस्टेड फूड जंक्शन ड्राई फूड
रोस्टेड चना रोस्टेड पी नट नमकीन चिक्की
आटो ड्राइवर एवं सेल्समेन की जरूरत है

310 पाव अवैध शराब सहित आरोपी गिरफ्तार

जबलपुर,। गोरखपुर थाना पुलिस ने अवैध शराब की तस्करी में लिप्त एक आरोपी को 310 पाव देशी शराब सहित धरदबोचा। पुलिस के अनुसार विश्वसनीय मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने साई नगर नया गाँव गेट नंबर 5 के आगे पत्थरों बीच छापा मारा। मौके पर साई नगर नया गाँव रामपुर निवासी 47 वर्षीय केशव गोंटिया के कब्जे से दो बोरियों में 310 पाव देशी शराब जब्त की गई। करीब 25 हजार 500 रुपए की शराब जब्त कर आरोपी के विरुद्ध 34(2) आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की गई। आरोपी की धरपकड़ में प्रधान आरक्षक हरक बहादुर थापा, विजय पटैल, अरूण रघुवंशी, आरक्षक जावेद, सत्यनारायण, रविसागर, सहायक उप निरीक्षक चालक उमेश रैकवार की मौजूद रहे।

अब नई श्रृंखला के साथ
KARAN SHOES
MALVIYA CHOWK ANAND CINEMA ROAD KATANGA CROSSING NAYA BAZAR MALVIYA CHOWK

» न्यूज गैलरी

अशोक नामदेव अध्यक्ष मनोनीत

जबलपुर यशभारत ।नामदेव समाज के सेवाभावी कार्यकर्ता अशोक नामदेव को जबलपुर नामदेव समाज विकास परिषद का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है।इस आशय की जानकारी म.प्र. के प्रांतीय अध्यक्ष इंजी. अरूण नामदेव भोपाल ने प्रेषित पत्र में दी है। अशोक नामदेव को निर्देशित किया गया है कि जिले की कार्यकारिणी की घोषणा जल्द से जल्द करें। इस नियुक्ति पर समाज के बाबू लाल नामदेव, गिरीश वर्मा, गौरीशंकर नामदेव, इंजी. टी पी नामदेव, रिटा. डी. एस.पी. जे.पी. वर्मा, डी.के. नामदेव, दीपक नामदेव, राजसागरी, ब्रजेश नामदेव, वैभव नामदेव, श्रीमती चन्द्रकला घुराटिया, डा. देव कुमार, मुन्नी लाल नामदेव आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

विजन जबलपुर का अंग दान अभियान सप्ताह 13 तक चलेगा

जबलपुर यशभारत।सामाजिक संस्था विजन जबलपुर के तत्वावधान में 7 से 13 अगस्त तक अंगदान सप्ताह अभियान चलाया जा रहा है।जिसमें पीड़ित मानवता की सेवा के तहत अंगदान के इच्छुक लोगों से संकल्प पत्र भरवाने के लिए आम लोगों को प्रेरित किया जा रहा है।संस्था के अध्यक्ष राजेंद्र सिंह के अनुसार संस्था का ध्येय वाक्य हम कुछ ऐसा कर जाएं यादों में बस जाएं है।इसी भावना को लेकर 13 अगस्त को विश्व अंग दान दिवस पर संस्था के सभी पदाधिकारी 7 अगस्त से संकल्प पत्र भरवा रहे हैं।जिसमें नेत्र, किडनी, लीवर या पूरा शरीर मानवता के कल्याण के लिए देना चाहते हैं उनसे संकल्प पत्र भरवाये जा रहे हैं।जो भी व्यक्ति 18 वर्ष से अधिक आयु के हैं वे मेडिकल कालेज अस्पताल के निर्धारित प्रपत्र में अपना संकल्प पत्र भर सकते हैं।

जिसकी जहां से इच्छा वहीं से पहुंच रहे स्टेशन के अंदर

प्रवेश द्वार के अलावा अतिरिक्त द्वार भी खुले रहते हैं

जबलपुर यश भारत/ मुख्य रेलवे स्टेशन को एयरपोर्ट की तर्ज पर बनाए जाने की कवायत चल रही है वहीं दूसरी प्लेटफार्म तक यात्री अन्य द्वारों से अंदर पहुंच रहे रेलवे अधिकारियों का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है जिसके चलते यात्री अपनी मर्जी के अनुसार जहां इच्छा हो वहां से अंदर घुस जाते जिससे स्टेशन की सुरक्षा व्यवस्था की पोल खुल रही है/

उल्लेखनीय है कि मुख्य रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर मुख्य प्रवेश द्वार के अलावा अन्य गेट ऐसे हैं जहां से यात्री अपनी मर्जी के अनुसार प्लेटफार्म तक पहुंच जाते हैं जानकारी के मुताबिक प्लेटफार्म नंबर 1 के पार्सल गेट न्यायालय गेट डाकघर एवं जीआरपी की बाउंड्री से अंदर पहुंच रहे इसी तरह से प्लेटफार्म नंबर 6 में मुख्य प्रवेश द्वार के अलावा जन आहर एवं व्हीआईपी पार्सल गेट हमेशा खुला रहता है उक्त गेट से भी यात्री अंदर पहुंच रहे/

फिर स्कैनर का क्या मतलब

रेलवे द्वारा मुख्य रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक एवं छ में यात्रियों के समान बैग सूटकेस अटैची आदि चेक करने के लिए करोड़ों रुपए के स्कैनर लगाए गए जिससे प्लेटफॉर्म पहुंचने वाले यात्रियों का सामान चेक किया जाता है किंतु यात्री अन्य द्वारों से अपने सूटकेस अटैची बैग इत्यादि लेकर अंदर पहुंच जाते हैं जिससे लगे स्कैनर औचित्यहीन साबित हो रहे।

बिना रोक-टोक के एस्केलेटर से पहुंचते हैं अंदर

प्लेटफार्म नंबर 6 पर यात्रियों की सुविधाओं के लिए लगा एस्केलेटर जिसमें यात्रियों का बे रोकटोक आवागमन लगा रहता है इस जगह पर कोई टिकट निरीक्षक भी नहीं रहता है ठीक इसी तरह से 6 नंबर की बाउंड्री वालों से लोगों का आना-जाना लगा रहता है जिस ओर रेलवे के संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट होना जरूरी है/

बाल ब्रांड एम्बेसडर आराध्या को सांसद ने दिया आशीर्वाद

जबलपुर यशभारत । स्मॉल वंडर्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल पांचवी कक्षा की छात्रा एवं नगर निगम की स्वच्छता सर्वेक्षण अभियान 2023 की बाल ब्रांड एंबेसडर आराध्या तिवारी ने लोकसभा सांसद राकेश सिंह से भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया और आभार व्यक्त किया। आराध्या ने संस्कारधानी के नागरिकों से अपील की है कि नगर निगम ने स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 का फीडबैक अभियान शुरू किया है।इस हेतु संस्कार धानी के नागरिक अपने सकारात्मक विचार प्रदान करें और शहर को स्वच्छता में नंबर वन बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करें।

मेडिकल कालेजों में विभागाध्यक्ष का रोटेशन अव्यवहारिक

जबलपुर, यशभारत । मेडिकल कालेजों में विभागाध्यक्षों का रोटेशन करना पूरी तरह अव्यवहारिक है। यह नेशनल मेडिकल कमीशन के रेग्युलेशन के खिलाफ है। इस रोटेशन प्रथा से चिकित्सा, शैक्षणिक गुणवत्ता तथा प्रशासन पर दूरगामी विपरीत परिणाम होंगे। अतः चिकित्सा शिक्षा विभाग के उप सचिव केके दुबे द्वारा 05 अगस्त को जारी प्रदेश के चिकित्सा महाविद्यालयों के विभागाध्यक्ष के पद पर रोटेशन करने का आदेश गलत है। इसे वापस लिया जाए। यह आपत्ति नागरिक उपभोक्ता मार्गदर्शक मंच ने प्रमुख सचिव चिकित्सा शिक्षा विभाग को भेजी है। डॉ. पीजी नाजपाण्डे ने बताया कि यह आदेश राष्ट्रीय आर्युविज्ञान आयोग की अधिसूचना 21(1)2021 जिसे राज पत्र में 14 फरवरी 2022 को प्रकाशित किया गया था, उसके क्लॉज 3.10 के खिलाफ है। विभागाध्यक्ष पर विभाग के प्रशासन का पूरा जिम्मा होता है। यह पद न केवल शैक्षणिक बल्कि प्रशासनिक पद भी है। अतः क्लॉज 3.10 के खिलाफ है। विभागाध्यक्ष पर विभाग के प्रशासन का पूरा जिम्मा होता है।

सामाजिक सरोकारों को निभा रहा पमरे महिला कल्याण संगठन

जबलपुर यशभारत। महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती संध्या गुप्ता के नेतृत्व में पश्चिम मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन, रेल कर्मचारियों के परिवारों के प्रति सामाजिक सरोकारों को निभा रहा है साथ ही जागृति बाल गृह द्वारा बेसहारा, निराश्रित, गुमशुदा, निस्सहाय और अनाथ बच्चों के कल्याण के लिए भी निरंतर कार्य कर रहा है। जिसमें 6 से 18 वर्ष तक के बालक रहते है। संस्था में बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए आवास, भरण-पोषण, शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था है। इन सभी बालकों को अच्छी शिक्षा हेतु स्कूलों में दाखिला दिलाया गया है।जागृति बाल केन्द्र के बालकों ने इस वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। संगठन की अध्यक्षा श्रीमती संध्या गुप्ता के निर्देशन

अनाथ बच्चों के कल्याण के लिए कर रहा निरंतर

में संगठन की सभी महिलाओं ने अपना उल्लेखनीय योगदान देकर बाल केन्द्र के बालकों को पूरे वर्ष सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। इन प्रयासों के फलस्वरूप 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित सभी 6 छात्र प्रथम श्रेणी उर्त्तीण हुए तथा अधिकतम अंक 80 प्रतिशत रहे। इसी प्रकार कक्षा 10वीं के छात्र भी प्रथम श्रेणी में उर्त्तीण हुए।

उल्लेखनीय सफलता में कक्षा 12वीं के दो छात्र जेईई (मेन्स) की परीक्षा में सम्मिलित हुए एवं एक छात्र ने जेईई (मेन्स) में उत्तीर्ण होकर जेईई (एडवांस) परीक्षा में सम्मिलित हुआ और इस छात्र को शासकीय इंजीनियरिंग कालेज जबलपुर में प्रवेश मिल गया हैं इसके अतिरिक्त एक छात्र को शासकीय पॉलिटेक्निक में बीफार्मा मे एवं दो छात्रों को होटल मेनेंजमेंन्ट में प्रवेश मिला हैं। इसके साथ ही कक्षा 12वीं के 3 छात्रों ने अग्निवीर परीक्षा में लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की।बोर्ड परीक्षाओं के अलावा अन्य बालक भी अपनी-अपनी कक्षाओं में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए। संगठन की महिलाओं के प्रयासों से बाल केन्द्र में एक अच्छा वातावरण निर्मित हुआ है जिसमें सभी बालक अपने उज्जवल भविष्य के लिए आशावित होकर मेहनत कर रहे है। इस उपलब्धि पर पमरे के महाप्रबंधक सुधीर कुमार गुप्ता ने पमरे महिला संगठन की सभी सदस्याओं को बधाई दी है और आशा है कि आगे और भी अच्छे परिणाम आयेगें।

निगम के वर्कशॉप से टैक्टर टैंकर गायब!

जबलपुर, यशभारत। नगर निगम में कुछ भी हो सकता है। अब नगर निगम में तैनात ट्रेक्टर-टेंकर के गायब होने की चर्चा है। कहा जा रहा है कि इस पूरे केस में निगम के किसी कर्मी का हाथ है, वहीं अधिकारी बचाने में जुटे हैं। सूत्रों ने बताया कि कुछ माह पूर्व ट्रेक्टर-टेंकर क्रमांक एमपी 20 एच 1912 वर्कशॉप से रांझी वाटर फिल्टर प्लांट के लिएरवाना किया गया लेकिन वह टेंकर उसके बाद कहीं भी नहीं देखा गया। खास बात यह है कि यह बात जब अधिकारियों के सामने आई तो उन्होंने जांच कराना तक जरुरी नहीं समझा। ऐसे में धीरे-धीरे यह मामला पूरा दब गया लेकिन एक बार फिर टैंकर गायब होने का मामला गर्मा रहा है। वर्कशॉप प्रभारी, जीएस मरावी, का कहा है कि मुझे इस संबंध में जानकारी नहीं है, आप वर्कशॉप वालों से बात कर लीजिए। सवाल सबसे बड़ा यह है यदि टैक्टर टेंकर गायब हुआ है तो इसके रिपोर्ट क्यों नहीं की गई, यदि गायब नहीं हुआ है तो टैक्टर टैंकर वर्कशॉप में क्यों नहीं है।

72 घंटे बाद भी नहीं लगा ट्रक चालक का सुराग तलाश जारी

जबलपुर यश भारत। जिले के मझगवा थाना क्षेत्र के अंतर्गत सूखा नाला में ट्रक पलट जाने के कारण उसका कंडक्टर तो किसी प्रकार से तैर कर बाहर निकल गया किंतु उसका चालक सूखा नाला में बह गया जिसकी 72 घंटे से स्थानीय गोताखोरों द्वारा तलाश जारी है जिसका सुराग अभी भी नहीं लगा है/ इस घटना के संबंध में पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि विगत 4 अगस्त को एक 14 चक्का ट्रक चालक सूखा नाला से ट्रक निकल रहा था इसी दौरान वह बीच पुल में तेज बहाव के कारण अपना संतुलन खो बैठा और ट्रक पुल के नीचे पलट गया घटना में ट्रक का कंडक्टर खिड़की से निकला और तैर कर बाहर आ गया था किंतु चालक का पता नहीं चला पुलिस के मुताबिक ग्राम पटरिया थाना टिकरिया जिला मंडला का रहने वाला 23 वर्षीय दीपक सिंगरौर की तलाश घटना के बाद से 10 किलोमीटर दूर तक की गई है जिसका सुराग नहीं लगा है उक्त नाले में तीन अन्य नाले मिलने के कारण उसमें तेज बहाव रहता है और वह नाला सीधे जाकर हिरण नदी में मिलता है प्रथम दृष्टया ऐसा लगता है कि ट्रक चालक सूखा नाला के तेज बहाव मैं आने के कारण हिरण नदी में बह गया है।

नशा मुक्ति का अभियान सफल बनाएं : कलेक्टर

जबलपुर, यशभारत । कलेक्टर सौरभ कुमार सुमन की अध्यक्षता में नशा मुक्ति को लेकर बैठक आयोजित की गई। इस दौरान उन्होनें कहा कि नशा मुक्ति अभियान अंतर्गत नशीले पदार्थों के सेवन से मुक्ति के लिये जन जागरूकता लायें तथा स्कूल व कॉलेज स्तर पर विभिन्न गतिविधियां आयोजित करें। अभियान में महिलाओं को सशक्त करने पर विशेष ध्यान दिया जाये, ताकि वे अपने बच्चों को नशा मुक्त रखने के लिये प्रेरित करते रहें। नशा मुक्ति के लिये अवेयरनेस जनरेशन कार्यक्रम होते रहें। व्यक्ति व समुदाय

तक पहुँच सुनिश्चित कर हॉटस्पॉट व वालेंटियर्स का चयन करें। काउंसलिंग के साथ-साथ नशा नियंत्रण कानून का प्रभावी क्रियान्वयन करें। साथ ही आटो, रिक्शा, कचरा वाहन आदि द्वारा नशा मुक्ति के संदेशों तथा नशा मुक्ति गान का प्रसारण हो। शैक्षणिक संस्थाओं में नशा मुक्ति को लेकर व्याख्यान, विभिन्न प्रतियोगितायें व नुक्कड़ नाटक आदि किया जाये। बैठक में शिक्षा संबंधी सभी विभाग चाहे वह उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, स्कूल शिक्षा, चिकित्सा शिक्षाव आयुष आदि क्यों न हो सभी को नशा मुक्ति अभियान में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने के निर्देश दिये। वहीं जन अभियान परिषद, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, नगरीय विकास एवं आवास, महिला एवं बाल विकास, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, गृह, आबकारी एवं जेल आदि विभागों से नशा मुक्ति के लिये अलग-अलग अभियान चलाने के निर्देश दिये गये।

कलेक्टर ने कहा कि स्कूलों एवं कॉलेजों में नशा मुक्ति कार्यक्रम अवश्य कराये तथा नशा मुक्ति केन्द्रों से प्रतिवेदन तैयार करायें और स्कूलों में प्रहरी क्लब को सक्रिय करें। बैठक के दौरान जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती जयति सिंह सहित सभी संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित थे। बैठक के दौरान कलेक्टर सुमन ने सभी अधिकारियों को नशा मुक्ति का शपथ भी दिलाया।

मुख्य मार्गों से मोहल्ला, कालोनियों तक की अधिकांश स्मार्ट स्ट्रीट लाइट बंद

जबलपुर,। स्मार्ट सिटी द्वारा स्मार्ट लाइट प्रोजेक्ट के तहत 13 करोड़ रुपये खर्च कर शहर भर में दो वर्ष पूर्व नई एलईडी लाइट लगाई गई थीं। दावा किया गया था कि शहर दूधिया रोशनी से नहा जाएगा, परंतु मेंटनेंस के अभाव में बारिश में शहर के तमाम मुख्य मार्गो से लेकर अधिकांश मोहल्ला, कालोनियों की स्ट्रीट लाइट बंद हो गई है। मानसून सीजन में ज्यादातर लाइट बंद होने से दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। रात में आवागमन करने वाले वाहन चालकों को सड़क पर बैठे मवेशी नजर न आने से वे दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं।

28 हजार परपंरागत लाइट बदली गई

स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत शहर के प्रमुख मार्गो से लेकर सभी वार्डो के गली-मोहल्लों में दो वर्ष पूर्व चमकदार एलईडी लगा दी गई थी करीब 28

हजार नई एलईडी से रोशन कर दिया गया है। लेकिन कई वार्ड ऐसे हैं जहां एलईडी युक्त स्ट्रीट लाइट अक्सर बंद रहती है।

जहां पहले उजियारा था वहां एलईडी के फेर में अब अंधेरा पसरा

हजार परपंरागत स्ट्रीट लाइट जिसमें हेलोजन (पीली बत्ती) व ट्यूब लाइट को भी बदलकर उसकी जगह दूधिया रोशनी बिखेरती नई एलईडी लगाई गई थी। स्मार्ट सिटी ने दावा किया था अब तक शहर के सभी वार्डो को करीब 40 तकनीकी कर्मचारियों ने जल्दबाजी करते हुए बिजली के पोल से एलईडी के ऐसे कनेक्शन ऐसे किए कि कई जगह एलइडी दिन-रात जल रही हैं कई जगह एलईडी खराब होकर बंद हो रही। नगर निगम व स्मार्ट सिटी के तकनीकी अधिकारी भी इसकी सुध नहीं ले रहे हैं। विदित हो कि एलईडी लाइट की गुणवत्ता लेकर पहले भी सवाल उठ चुके है।

कार्यालय नगर पालिक निगम जबलपुर (म.प्र.) निविदा सूचना

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑन-लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाईट www.mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्र.	टेण्डर क्रमांक जारी दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं ईएमडी	निविदा की अंतिम तिथि
1	PRO - 295 दिनांक 07.08.2023	सुभाष चंद्र बोस वार्ड अंतर्गत संजय नगर दुर्गा चौक से पुनीत नगर नेता कालोनी तक नाला निर्माण कार्य।	12 माह एवं रुपये 168.01 लाख	12000.00 एवं 84409/	08.09.2023

निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑन-लाईन www.mptenders.gov.in की वेबसाईट पर ही किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जायेगा। कार्यपालन यंत्री, नगर निगम जबलपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम जबलपुर (म.प्र.) (लोककर्म विभाग)
प्रथम निविदा आमंत्रण सूचना

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाईट https://mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्र.	टेन्डर क्रमांक जारी दिनांक	कार्य का नाम	कार्य समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1.	PRO-289 07/08/2023	पं. मोतीलाल नेहरू वार्ड में रामनगर में हाजी मकबूल अहमद के निवास से शिफा किराना तक नाली निर्माण।	3 माह रु. 2.37 लाख	2000/- 2373/-	18.08.2023

नोट : निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन की वेबसाइट https://mptenders.gov.in पर ही किया जायेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जायेगा। कार्यपालन यंत्री, संभाग क्र. 14, नगर निगम, जबलपुर

कार्यालय कार्यपालन यंत्री,
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड जबलपुर

ई-मेल- eephedjab@nic.in दूरभाष क्रमांक 0761 2344814

निविदा क्रमांक 06/व.ले.लि./का.यं./2023-24 जबलपुर दिनांक 04.08.2023

म.प्र. के राज्यपाल की ओर से अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निम्नानुसार कार्यों की ऑनलाईन डिजिटल मुहरबंद निविदा आमंत्रित की जाती है, जिसका अवलोकन वेबसाईट में किया जा सकता है। निविदा प्रपत्र केवल उपर उल्लेखित वेबसाईट से ऑनलाईन भुगतान कर क्रय किए जा सकते हैं।

Name of Work – Drilling of 350mm x 150mm dia 60 mt. deep Gravel packed Tube Well 150 mm dia 60 mtr deep ordinary tubewell total 120 mtr 40 nos combination ring for piped water supply scheme in various village at Distt. Jabalpur.

निविदा क्र./ दिनांक	सिस्टम क्र.	निविदा की कुल लागत रू. लाख	धरोहर राशि	निविदा प्रपत्र मूल्य	कार्य की अवधि
06/04.08.2023	296932	49.97	50000/-	5000/-	03 Months

ऑनलाईन निविदा फार्म क्रय करने की अंतिम तिथि – 17.08.2023 समय 17.30 बजे तक
ऑनलाईन निविदा दर डालने की अंतिम तिथि – 17.08.2023 समय 17.30 बजे तक
ऑनलाईन दस्तावेज खोलने की तिथि – 21.08.2023 समय 11.00 बजे

G-17917/23 (डी.पी. मंगोरे) कार्यपालन यंत्री

दो पहिया वाहन पर तीन सवारी ना बैठाएं सतर्क रहें, सुरक्षित रहें।

समीक्षा गोष्ठी

परसाई भवन में आयोजित हुआ कार्यक्रम व्यंगकारों ने बांधा समां

परसाई की जन्मशती पर गूंजी व्यंगात्मक रचनाएं

जबलपुर यशभारत। व्यंग्य जगत के पितामह हरिशंकर परसाई जन्मशती पर व्यंग्यम जबलपुर द्वारा एक समीक्षा गोष्ठी का आयोजन परसाई भवन में किया गया। जिसमें ख्यातिलब्ध व्यंग्यकार, व्यंग्य धारा पत्रिका के सम्पादक डॉ प्रेम जनमेजय दिल्ली से पधारे।

व्यंग्यम के मंच पर जयप्रकाश पांडेय के व्यंग्य संकलन डांस इंडिया डांस और डॉ प्रेम जनमेजय के व्यंग्य संकलन सींग वाले गधे पर विस्तृत चर्चा हुई। डॉ प्रेम जनमेजय के व्यंग्य संकलन पर

कुंदन सिंह परिहार और प्रतुल श्रीवास्तव ने विस्तृत आलेख पढ़े और सुरेश कुमार मिश्र विचित्र ने उनके संग्रह की एक व्यंग्य रचना का पाठ किया। जयप्रकाश पांडेय के व्यंग्य संकलन पर अभिमन्यु जैन और राकेश सोहम ने आलेख पढ़े और यशोवर्धन पाठक ने रचना पाठ किया। गोष्ठी का संचालन रमेश सैनी का रहा ।धन्यवाद ज्ञापन विजय तिवारी किसलय ने दिया।इस कार्यक्रम में शहर के नामचीन व्यंग्यकारों ने अपनी उपस्थिति देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

संपादकीय

अदालत के फैसले से जन-विश्वास को संबल

आखिरकार राहुल गांधी को मानहानि के एक मामले में देश की शीर्ष अदालत से राहत मिल ही गई। दरअसल, एक चुनावी सभा में 'मोदी सरनेम' को लेकर की गई उनकी विवादित टिप्पणी के बाद उनके खिलाफ गुजरात के एक विधायक ने मानहानि का वाद दायर किया था। बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद यह तथ्य पुष्ट हुआ है कि शीर्ष अदालत भारत में लोकतंत्र की संरक्षक की भूमिका में विद्यमान है। इस धारणा पर जनता के विश्वास को भी बल मिला है। अदालत के इस निर्णय के निहितार्थ यह भी हैं कि राजनीति में अपने विरोधियों के साथ हिसाब-किताब पूरा करने में मानहानि कानून का बेजा इस्तेमाल होता है। निस्संदेह, ऐसे मामलों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी अनावश्यक अंकुश लगता है। जिसे लोकतंत्र के हित में कदापि नहीं कहा जा सकता। राजनीतिक पंडित 23 मार्च को दिये गये सूरत अदालत के निर्णय की तार्किकता को लेकर सवाल उठाते रहे हैं। दरअसल,इसमें राहुल गांधी को एक अज्ञात समूह के खिलाफ राजनीतिक बयान के लिये दोषी ठहराया गया था। वैसे भी दोष सिद्धि को यदि सही मान लिया जाये तो बिना किसी आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति को आपराधिक मानहानि के मामले में दो साल की कैद की अधिकतम सजा देना तार्किक नहीं कहा जा सकता। दरअसल, इस मामले में शीर्ष अदालत ने कहा भी है कि ट्रायल कोर्ट के जज द्वारा अधिकतम सजा देने का कोई विशेष कारण नहीं बताया गया है।

ऐसे में तर्क दिया गया कि इस मानहानि मामले में यदि सजा की अवधि एक दिन भी कम होती तो लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रावधानों के तहत उन्हें तत्काल अयोग्य घोषित करने की जरूरत नहीं पड़ती। दलील दी गई कि मानहानि के लिये एक जमानती, गैर संज्ञेय और समझौता योग्य अपराध के मामले में अधिकतम सजा देना अनुचित है। ऐसे ही निचली अदालत के अधिकतम सजा देने के आदेश को सही ठहराने में सूरत सत्र न्यायालय और गुजरात उच्च न्यायालय की भूमिका पर सवाल उठे हैं। बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से निचली अदालतों के फैसलों से हुई ऊंच-नीच की भरपाई हुई है। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने पाया कि राहुल गांधी के बयान को भी अच्छा नहीं माना जा सकता। यह भी कि सार्वजनिक जीवन में सक्रिय एक व्यक्ति को भाषण देते वक्त सावधान रहना चाहिए। बहरहाल, इस फैसले से राहुल गांधी को राहत मिलेगी। अब उनकी लोकसभा सदस्यता वापस पाने की राह खुल गई है। लेकिन इसके बावजूद यह घटनाक्रम तमाम राजनेताओं के लिये बड़ा सबक है कि वे अपने प्रतिद्वंद्वियों की आलोचना करने में संयम का परिचय दें। इस तरह के घटनाक्रम समाज में अच्छा संदेश नहीं देते। राजनेताओं की यह आक्रामकता कालांतर समाज में नकारात्मक प्रवृत्तियों को ही बढ़ावा देती है। बहरहाल, सामाजिक सद?भावना और समरसता के लिए जरूरी है कि राजनेताओं की बयानबाजी में संयम हो। खासकर सार्वजनिक जीवन में बड़े दलों का प्रतिनिधित्व करने वाले राजनेता ऐसा व्यवहार करें जो आने वाली पीढ़ी के लिये मार्गदर्शक साबित हो। यह वक्त की जरूरत भी है।

थम नहीं रहा चीतों की मौत का सिलसिला

नामीबिया से लाकर कूनो अभ्यारण्य में बसाए गए चीतों की लगातार हो रही मौतों से उनकी निगरानी, स्वास्थ्य और मौत के लिए आखिर कौन जिम्मेबार है ? यह सवाल बड़ा होता जा रहा है। जिस तरह से चीते अकाल मौत का षिकार हो रहे हैं, उससे लगता है, उच्च वनाधिकारियों का ज्ञान चीतों के प्राकृतिक व्यवहार से लगभग अछूता है। इसलिए एक-एक कर छह वयस्क और तीन षावकों की मौत पांच माह के भीतर हो गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वाकांक्षी चीता परियोजना के लिए यह बड़ा झटका है। विडंबना है कि इन चीतों की वास्तविक मौत के कारण भी पता नहीं चले हैं।

चीतों की मौत का कारण कॉलर आईडी से हुआ संक्रमण हैं, या जलवायु परिवर्तन एकाएक यह कहना मुश्किल है ? हालांकि केंद्रीय वनमंत्री भूपेंद्र यादव ने मौत की हकीकत पर पर्दा डालने की दृष्टि से कह दिया कि 'चीतों की मौत का मुख्य कारण कोई बीमारी नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाला संक्रमण है। चूंकि नामीबिया और श्योपुर का जलवायु अलग-अलग है और पहला वर्ष होने के कारण उन्हें यहां के वातावरण में ढलने में कठिनाई आ रही है। मानसूनी असंतुलन के कारण हम 9 चीतों का नुकसान उठा चुके हैं। चीतों की सुरक्षा को लेकर केंद्र सरकार गंभीर है, क्योंकि यह लंबी परियोजना है और हर वर्श चीते आने हैं।' जबकि कुछ चीतों की मौतें कारण का स्पष्ट उल्लेख कर रही हैं। मादा चीता ज्वाला के शावकों के साथ देख-रेख में पूरी तरह लापरवाही बरती गई। इन शावकों का वजन जब 40 प्रतिशत रह गया और ये षिथिल हो गए, तब इनके उपचार का ख्याल वनाधिकारियों को आया। नतीजतन तीन षावक काल के गाल में समा गए। मादा चीता दक्षा को जोड़ा बनाने की दृश्टि से दो नर चीतों के साथ छोड़ दिया गया। जबकि ऐसा कभी किया नहीं जाता कि एक मादा के पीछे दो नर छोड़ दिए जाएं। नतीजा निकला कि संघर्श में दक्षा कि मौत हो गई। इन सब स्पष्ट कारणों के चलते ही नामीबिया से आए विशेषज्ञ चिकित्सक सच्चाई तक न पहुंच जाए, इसलिए उनके साथ जिम्मेबार अधिकारी असहयोग बनाए हुए है। अब कूनों में 14 चीते षेश हैं, जिनमें सात नर, छह मादा और एक शावक हैं। इनमें निर्वा नाम की एक मादा लपता है। इसे ट्रेंकुलाइज कर बाड़े में लाने की कोषिष हो रही है। हालांकि निर्वा की रेडियो कॉलर खराब हो गई है, इसलिए कई दिन से यह लोकेषन ट्रांसमीटर के दायरे में ही नहीं आ रही है। कुछ जानकारों का मानना है कि इस चीते की मौत हो चुकी है। दरअसल यदि अतीत में जाएं तो पता चलता है कि विदेशी चीतों को भारत की धरती कभी रास नहीं आई। इनको बसाने के प्रयास पहले भी होते रहे हैं। एक समय चीते की रफ्तार भारतीय वनों की शान हुआ करती थी। लेकिन 1947 के आते-आते चीतों की आबादी पूरी तरह लुप्त हो गई। 1948 में अंतिम चीता छत्तीसगढ़ के सरगुजा में देखा गया था। जिसे मार गिराया गया। चीता तेज रफ्तार का आश्चर्यजनक चमत्कार माना जाता है। अपनी विशिष्ट एवं लोचपूर्ण देहयष्टि के लिए भी इस हिंसक वन्य जीव की अलग पहचान थी। शरीर में इसी चपलता के कारण यह जंगली प्राणियों में सबसे तेज दौड़ने वाला धावक है। इसलिए इसे जंगल की बिजली भी कहा गया। हालांकि भारत में चीतों के पुनर्वास की कोषिषें असफल रही हैं। दरअसल, दक्षिण अफ्रीका के जंगलों से 1993 में दिल्ली के चिड़ियाघर में चार चीते लाए गए थे, लेकिन छह माह के भीतर ही ये चारों मर गए। चिड़ियाघर में इनके आवास, परवरिश व प्रजनन के पर्याप्त उपाय किये गये थे, लिहाजा उम्मीद थी कि यदि इनकी वंशवृद्धि होती है तो देश के अन्य चिड़ियाघरों व अभ्यारण्यों में ये चीते स्थानांतरित किये जाएंगे। हालांकि चीतों द्वारा चिड़ियाघरों में प्रजनन अपवाद घटना ही होती है। नतीजतन प्रजनन संभव होने से पहले ही चीते मर गए। बीती सदी में चीतों की संख्या एक लाख तक थी, लेकिन अफ्रीका के खुले घास वाले जंगलों से लेकर भारत सहित लगभग सभी एशियाई देशों में पाया जाने वाला चीता अब पूरे एशियाई जंगलों में गिनती के रह गए हैं। राजा चीता (एसिनोनिक्स रेक्स) जिम्बाब्वे में मिलता है। अफ्रीका के जंगलों में भी गिने-चुने चीते रह गए हैं। तंजानिया के सेरेंगती राष्ट्रीय उद्यान और नामीबिया के जंगलों में गिने-चुने चीते हैं। प्रजनन के तमाम आधुनिक व वैज्ञानिक उपायों के बावजूद जंगल की इस फुर्तीली नस्ल की संख्या बढ़ाई नहीं जा पा रही है। यह प्रकृति के समक्ष वैज्ञानिक दंभ की नाकामी है। जूलॉजिकल सोसायटी ऑफ लंदन की रिपोर्ट को मानें तो दुनिया में 91 प्रतिशत चीते 1991 में ही समाप्त हो गए थे। अब केवल 7100 चीते पूरी दुनिया में बचे हैं। एशिया के ईरान में केवल 50 चीते षेश हैं। अफ्रीकी देष केन्या के मासीमारा क्षेत्र को चीतों का गढ़ माना जाता था, लेकिन अब इनकी संख्या गिनती की रह गई है। बीती सदी के पांचवे दशक तक चीते अमेरिका के चिड़ियाघरों में भी थे। प्राणी विशेषज्ञों की अनेक कोशिशों के बाद इन चीतों ने 1956 में शिशुओं को जन्म भी दिया, परंतु किसी भी शिशु को बचाया नहीं जा सका। चीते द्वारा किसी चिड़ियाघर में जोड़ा बनाने की यह पहली घटना थी, जो नाकाम रही। जंगल के हिंसक जीवों का प्रजनन चिड़ियाघरों में आश्चर्यजनक ढंग से प्रभावित होता है, इसलिए शेर, बाघ, तेंदुए व चीते चिड़ियाघरों में जोड़ा बनाने की इच्छा नहीं रखते हैं। भारत में चीतों की अंतिम पीढ़ी के कुछ सदस्य बस्तर-सरगुजा के घने जंगलों में थे, जिन्हें 1947 में देखा गया था। इनके संरक्षण के जरूरी उपाय हो पाते, इससे पहले ही चीतों के इन अंतिम वंशजों का शिकार, षिकार के शौकीन राजा-महाराजाओं ने करके वन की इस तेज गति के ताबूत में अंतिम कील ठोंक दी। इस तरह भारतीय चीतों की नस्ल पर पूर्ण विराम लग गया था। हमारे देश के राजा-महाराजाओं को घोड़ों और कुत्तों की तरह चीते पालने का भी शौक था। चीता शावकों को पालकर इनसे जंगल में शिकार कराया जाता था। राजा लोग जब जंगल में आखेट के लिए जाते थे, तो प्रशिक्षित चीतों को बैलगाड़ी में बिठाकर साथ ले जाते थे। इनकी आंखों पर पट्टी बांध दी जाती थी, जिससे यह किसी मामूली वन्य जीव पर न झपटे। जब शिकार राजाओं की दृष्टि के दायरे में आ जाता था, तो चीते की आंखों की पट्टी खोलकर शिकार की दिशा में हाथ से इशारा कर दिया जाता था। पलक झपकते ही शिकार चीते के जबड़े में होता। शिकार का यह अद्भुत करिश्मा देखना भी एक आश्चर्यजनक रोमांच की बात रही होगी ? भारत के कई राजमहलों में पालतू चीतों से शिकार कराने के अनेक चित्र अंकित हैं। मुगल काल में अकबर ने सैंकड़ों चीतों को बंधक बनाकर पाला। मध्यप्रदेश में मांडू विजय से लौटने के बाद अकबर ने चंदेरी और नरवर (शिवपुरी) के जंगलों में चीतों, बाघों, तेंदुओं और हथियों जैसे वन्य प्राणियों का शिकार किया। नरवर के जंगलों में अकबर ने जंगली हाथियों का भी खूब शिकार किया। ग्वालियर रियासत में सिंधिया राजाओं ने भी चीते पाले हुए थे, लेकिन चीतों को पाले जाने का शगल ग्वालियर रियासत में बीसवीं सदी के अंत तक ही संभव रहा। मार्को पोलो ने तेरहवीं शताब्दी के एक दस्तावेज का उदाहरण देते हुए बताया है कि कुबलई खान ने अपने ठिकानों पर एक हजार से भी अधिक चीते पाल रखे थे। इन चीतों के लिए अलग-अलग अस्तबल थे। चीते इस पड़ाव की चैकीदारी भी करते थे। बड़ी संख्या में चीतों को पालतू बनाने से इनके प्रकृतिजन्य स्वभाव पर प्रतिकूल असर तो पड़ा ही, इनकी प्रजनन क्रियाओं पर भी बेहद प्रतिकूल असर पड़ा। गुलामी की जिंदगी गुजारने व सईस के हंटर की फटकार की दहशत ने इन्हें मानसिक रूप से दुर्बल बना दिया, जिससे चीतों ने विभिन्न शारीरिक क्रियाओं में रुचि लेना बन्द कर दिया। जब चाहे तब भेड़-बकरियों की तरह हांक लगा देने से भी इनकी सहजता प्रभावित हुई। चीतों की ताकत में कमी न आए इसके लिए इन्हें मादाओं से अलग रखा जाता था। बैलों की तरह नर चीतों को बधिया करने की क्रूरताएं भी राजा-महाराजाओं ने खूब अपनाई। इन सब कारणों से जंगल की इस बिजली की रोषनी मंद पड़ती गई और इक्कीसवीं शताब्दी के मध्य के आसपास एशिया भर में बुझ भी गई। कूनो में चीतों की जरूरत से ज्यादा तकनीक आधारित निगरानी और इन पर बार-बार ट्रेंकुलाइज का प्रयोग भी इनकी मौत का कारण बन रहा हैं।

प्रमोद भार्गव
लेखक/पत्रकार

राजनीतिक षड्यंत्र के शिकार राहुल गांधी

मोदी उपनाम मामले में गुजरात राज्य के अदालत में राहुल गांधी पर दायर केस में दोषी ठहराये जाने एवं अधिकतम 2 साल की सजा सुनाये जाने के प्रकरण जिससे राहुल गांधी की संसद सदस्यता समाप्त हो गई एवं आगे 10 वर्ष तक चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लग गया, पर फिलहाल देश की सर्वोच्य न्यायालय ने रोक लगा दी जिससे देश का राजनीतिक महौल गरमा गया है। कांग्रेस सर्वोचय न्यायालय के इस फैसले को सत्य की विजय मानते हुये राहुल गांधी की सदस्यता त्वरित गति से बहाल किये जाने मांग कर रही है तो सत्ता पक्ष भाजपा इस मामले पर राहुल गांधी कहां कहां कब तक बचेंगे का संदेश देकर नई रणनीति बनाने की प्रक्रिया में जुड़ती नजर आ रही है। इस तरह के उभरते परिवेश इस बात को साफ - साफ उजागर कर रहे है कि राहुल गांधी पर राजनीतिक शिकंजा तेज होता जा रहा है। जहां तक न्यायालय का मामला है , अपनी जगह सही है। जब कोई मामला न्यायालय में आता है तो उस मामले पर न्यायाधीश का जो फैसला आता है, स्वागत योग्य होता है। न्यायालय के फैसले पर उच्च न्यायालय से लेकर सर्वोच्य न्यायालय तक अपील करने का अधिकार संविधान ने दिया है। राहुल गांधी प्रकरण में मोदी उपनाम पर हुये केस को लेकर शुरू से ही प्रतिक्रिया आनी शुरू हो गई। मोदी उपनाम प्रकरण जहां से उभरा वहां की न्यायालय में केस न दर्ज कर गुजरात राज्य के न्यायालय में ही क्यों दर्ज हुआ ? इस प्रकरण से जुड़े व्यक्ति के अलावे गुजरात राज्य में रहने वाले उस व्यक्ति द्वारा जिसका कोई जिक्र नहीं, केस करना, केस को वापिस लेना, फिर से केस दुबारा करना एवं त्वरित गति से फैसला आना, त्वरित गति से सदस्यता समाप्त करना, आवास खाली करा लेना आदि उभरे परिवेश पर संदेह पैदा करता है। जिसपर सर्वोच्य न्यायालय में चर्चा अवश्य होगी। फिलहाल गुजरात राज्य के न्यायालय के फैसले पर सर्वोच्य न्यायालय ने रोक लगा दी है , अंतिम फैसला आना बाकी है। जहां तक मोदी उपनाम विवाद प्रकरण का मामला है, राहुल गांधी ने 2019 में लोकसभा चुनाव से पूर्व कर्नाटक राज्य के कोलार में आयोजित रैली में मोदी सरकार पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का आरोप लगाते हुये ललित मोदी, नीरव मोदी प्रकरण पर कहा था कि सभी चोरों का सरनेम मोदी क्यों होता है ? यहीं मामला मानहानि का मामला बन गया जिसमें राहुल गांधी घिर गये। चुनाव के दौरान सभी राजनीतिक दल एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते ही रहते। राहुल का मोदी उपनाम प्रकरण इतना अपराधिक नहीं था, जिसके लिये इतनी कड़ी सजा मिले जिससे संसद की सदस्यता चली जाय। न्यायालय का फैसला तो फैसला होता है जिस पर कोई किंतु परन्तु नहीं पर फैसले से संतुष्ट नहीं होने पर अगली अदालत तक जाने का भी रास्ता खुला रहता। सर्वोच्य न्यायालय में अब यह मुद्दा जा चुका है। अंतिम फैसला आने पर ही मोदी उपनाम प्रकरण पर गुजरात राज्य की अदालत का फैसला का वास्तविक स्वरूप उजागर हो सकेगा।

डॉ. भरत मिश्र प्राची
(स्वतंत्र पत्रकार)

आपका राशिफल 8 अगस्त

शुभांक - 9,1,2

मेष — आज का दिन आपके लिए सकारात्मक परिणाम लेकर आएगा मेहनत करते रहे

वृष — विद्यार्थियों के उच्च शिक्षा के मार्ग प्रशस्त होंगे कला कौशल पर पूरा जोर रहेगा

मिथुन — आज का दिन आर्थिक मामलों के लिए अच्छा रहने वाला है परिवार के साथ समय व्यतीत करेंगे

कर्क — घर में अतिथियों के आने की पूरी संभावना दिख रही है तैयारी करें

सिंह — परिवार में शुभ और मांगलिक कार्य होने की वजह से परिवार के सभी सदस्य खुश रहेंगे

कन्या — कामकाज में आज आप सफलता की सीढ़ी चलेंगे कार्यशैली में सुधार आएगा

तुला — रोजगार की तलाश करें युवाओं को सफलता हाथ लग सकती है

वृश्चिक — आज का दिन आपके लिए बुद्धि और विवेक से निर्णय लेने का रहेगा सोच समझ कर बोलें

धनु — अजनबी पर विश्वास करने से बचे हैं अपनी नीति निर्णय किसी से चर्चा ना करें

मकर — जीवनसाथी की ओर से सरप्राइस गिफ्ट मिल सकता है दिन खुशनुमा रहेगा

कुंभ — विद्यार्थी को को मानसिक तनाव से छुटकारा मिल सकता है मेहनत करते रहें

मीन — निवेश संबंधित मामले में सोच समझकर निवेश करें व्यर्थ की चिंता से बचें

राशिफल चंद्रमा और नक्षत्रीय गणना अनुसार लिया गया है अपने भविष्य की जानकारी के लिए संपर्क करें
ज्योतिषाचार्य पंडित लोकेश व्यास
संपर्क - 9009074786

nurture.retail ने ऑनलाइन एक्सक्लूसिव उत्पाद लॉन्च कर खरीफ मौसम का उत्सव मनाया

जबलपुर, यशभारत। भारत के सबसे बड़े बी2बी कृषि इनपुट-ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, nurture.retail ने फसल सुरक्षा उत्पादों की एक व्यापक श्रृंखला लॉन्च की है। इस श्रृंखला को कंपनी के मोबाइल ऐप के जरिए केवल ऑनलाइन उपलब्ध कराया जाएगा। इन ऑनलाइन-एक्सक्लूसिव उत्पादों में हर्बिसाइड (शाकनाशी), फंगिसाइड (कवकनाशी), कीटनाशक और बायो-स्टिमुलेंट (जैव-उत्तेजक) शामिल हैं; ये उत्पाद हैं, यूनिक्राट, टर्फ, लांसर, यील्डविन, मैनजे़ट, अमेरेक्स, राइसबैक, इमिडास्टार और लैम्ब्डा स्टार। लॉन्च किए गए उत्पादों के पोर्टफोलियो में फसलों के रक्षक, जैव-उत्तेजक और फसलों के पोषक उत्पाद हैं, जोकि खरपतवार को रोकने, बीजों का उपचार करने, बड़ी मात्रा में कल्ले, शाखाएं निकलने में मदद करते हैं। साथ ही फसलों के विकास को सुनिश्चित करने, बीज की बुवाई से लेकर उसके पकने तक के विभिन्न चरणों के दौरान किसानों के सामने आने वाली समस्याओं को सुलझाने में भी मदद करने वाले उत्पाद हैं।

यह लॉन्च nurture.farm के nurture.retail डिविजन के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि इससे ऑनलाइन एक्सक्लूसिव उत्पादों की पेशकश का विस्तार हुआ है। साथ ही डिजिटल रूप से व्यापार करने को लेकर कृषि-इनपुट कंपनियों की प्रगतिशील सोच का भी पता चलता है। इन उत्पादों को मुख्य अतिथि यूपीएल एसएएस के सीईओ श्री आशीष डोभाल की उपस्थिति में अपने रिटेलर नेटवर्क के बीच nurture.retail द्वारा अपने प्रमुख कार्यक्रम शुभ आरंभ के माध्यम से लॉन्च किया गया। श्री आशीष डोभाल, चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर, यूपीएल एसएएस का कहना है, भारत में 15 करोड़ किसानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए लगभग 350,000 पंजीकृत और लाइसेंसधारी कृषि-इनपुट विक्रेता हैं। इनमें से ज्यादातर कृषि-इनपुट उत्पादों को पारंपरिक नेटवर्क (ऑफलाइन) के माध्यम से वितरित किया जाता है। ऑनलाइन-एक्सक्लूसिव उत्पादों की श्रृंखला को लॉन्च करने के लिए nurture.retail के साथ साझेदारी करके, हम उन अनछुए बाजारों तक पहुंच सकते हैं और विकास की रणनीति के रूप में डिजिटल चैनलों का फायदा उठा सकते हैं। पारंपरिक वितरण माध्यम वैसे ही अप्रभावित रहेंगे, इस बात को सुनिश्चित करते हुए, प्रमुख कृषि-इनपुट कंपनियों के हितों के लिए भी यह कदम सुरक्षा कवच की तरह काम करेगा। विशाल दुबे, बिजनेस हेड- nurture.retail ने कहा, खरीफ फसलों के उत्सव के तौर पर अपने प्लेटफॉर्म पर ऑनलाइन एक्सक्लूसिव उत्पादों को लॉन्च करते हुए हम बेहद उत्साहित हैं। यह ऑनलाइन-एक्सक्लूसिव उत्पाद 14 राज्यों में 72 घंटे के डिलिवरी के वादे के साथ उपलब्ध होंगे। एग्री-रिटेलर्स किफायती कीमतों में सबसे बेहतरीन कृषि संबंधित उत्पाद खरीद सकते हैं। हम बड़ी ही तेजी से और भी ऑनलाइन एक्सक्लूसिव उत्पादों को शामिल करेंगे, जिससे कृषि- रिटेलर्स के विकास के लिए कई रास्ते खुलेंगे। nurture.retail भारत का कृषि-तकनीक ओपन डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो किसानों की उन सारी जरूरतों को एक ही जगह पर लेकर आता है, जैसे- तकनीक, समाधान और वित्तीय सहायता। इसका तंत्र, खाद्य प्रणाली तक पहुंचता है, ग्राहकों की पसंद का दायरा बढ़ रहा है, इसकी पहुंच में पारदर्शिता आ रही है, यह सबके लिए तेज और किफायती हो रहा है। इस तरह, nurture.retailअनिश्चितता को कम करता है, जिससे किसानों को स्थायी परिणाम प्राप्त करने में मदद मिलती है। साल 2020 में स्थापित, nurture.retailरिमोट सेंसिंग, फार्म मशीनीकरण, ऑनलाइन मार्केटप्लेस, ट्रैसेबिलिटी और मार्केट लिंकेज जैसे सर्वोत्तम कृषि समाधानों को जोड़ती है।

कांग्रेस पार्टी के सभी दावेदारों ने विधानसभा सिहोरा 2023 जिताने का लिया संकल्प

जबलपुर, यश भारत। होटल यशराज खितौला में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी सिहोरा के संयोजन में सिहोरा विधानसभा स्तरीय कांग्रेस पार्टी की कार्यकर्ताओं के साथ आगामी विधानसभा चुनाव 2023 को लेकर रायशुमारी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के केंद्रीय पर्यवेक्षक कुलदीप सिंह राठौर जबलपुर जिले के प्रभारी सुनील जैन जबलपुर जिले के सह प्रभारी विभास जैन जिला के कांग्रेस कमेटी के ग्रामीण अध्यक्ष डा नीलेश जैन जिला संगठन मंत्री राजकिशोर पटेल ब्लाक अध्यक्ष बिहारी पटैल लगभग 2000 कांग्रेस कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में विधानसभा सिहोरा के सभी दावेदारों से एवं कांग्रेस पार्टी के विधानसभा सिहोरा के कार्यकर्ताओं से चर्चा रायशुमारी की गई जिसमें सभी दावेदारों ने एक स्वर से संकल्प लिया कि टिकट किसी भी को मिले हम सभी दावेदार एवं कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता मिलकर सिहोरा विधानसभा से कांग्रेस पार्टी को जिताने के लिए पूरी लगन और निष्ठा से कार्य करेंगे ईमानदारी से कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है साथी वार्ड नंबर 9 की पूर्व पार्षद श्रीमती लीला बाई 36 महिलाओं के साथ कांग्रेस पार्टी शामिल हो गई आज के कार्यक्रम में सुश्री कौशल्या गोटिया जी पूर्व राज्य मंत्री मध्य प्रदेश शासन पूर्व विधायक नित्यनिरंजन खंपरीया पूर्व विधायक नन्हेंलाल धुर्वे डॉक्टर संजीव वरकडे सुश्री रुक्मणी गोटिया मुन्ना सिंह मरावी श्रीमती जमुना मरावी सुश्री एकता ठाकुर श्रीमती प्रीति ठाकुर श्रीमती दुर्गा धुर्वे अशोक गोटिया ब्लॉक सिहोरा के प्रभारी लोकेश मिश्रा वरिष्ठ कांग्रेस जन केशव मिश्रा सुबोध पांडे कार्यकर्ता उपस्थित थेकांवड़ यात्रा में

भाजपा नेता राहुल ने समरसता यात्रा पर की पुष्पवर्षा

जबलपुर,यशभारत। सागर जिले में 100 करोड़ की लागत से बनने जा रहे संत शिरोमणि रविदास जी के मंदिर के पूर्व प्रदेश के 5 जिलों से निकाली जा रही समरसता यात्रा दीनदयाल चौक जबलपुर पहुंची जहां पर भाजपा नेता राहुल जैन ने समरसता यात्रा पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया और संत रविदास जी की पादुका का पूजन किया। इस मौके पर राहुल जैन के सहयोगियों की उपस्थिति रही।

कहते हैं पहला प्यार कभी भुलाया नहीं जाता फिर पता नहीं लोग क्यों अपने मां बाप का प्यार भूल जाते हैं। मुफ्त में सिर्फ मां बाप का ही प्यार मिलता है। इसके बाद दुनिया में हर रिश्ते के लिए कुछ न कुछ चुकाना पड़ता है। मंदिरों की जिन मूर्तियों कोहमने बनाया है हम उनकी पूजा तो करते हैं पर जिन्हों हमें बनाया हम उन मां बाप की पूजा क्यों नहीं करते।

-मुनिश्री तरुण सागर

कांवड़ यात्रा में शामिल हुए कांग्रेस नेता राजेश

जबलपुर,यशभारत। सावन के पांचवे सोमवार को मझौली में भव्य कांवड़ यात्रा निकाली गई जिसमें कांग्रेस नेता राजेश तिवारी ने शामिल होकर पुण्य लाभ अर्जित किया। इस दौरान कांग्रेस नेता राजेश तिवारी ने कांवड़ यात्रा का पूजन-अर्चन किया और भगवान शिव से जिले में अमन-चैन की कामना की। इस दौरान कांग्रेस नेता राजेश के साथ सैकड़ों कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

पार्षद मधुबाला ने कांवड़ यात्रा में कांवड़ियों का किया स्वागत

जबलपुर,यशभारत। पनागर मोहरी से निकाली गई कांवड़ यात्रा का स्वागत काली मंदिर के पास शांति समिति एवं राजीव गांधी वार्ड की पार्षद मधुबाला राजपूत ने किया। इस दौरान पार्षद मधुबाला राजपूत, गगन यादव, पवन गुप्ता, रवि संतोषी मयंक मिश्रा,भूषण पाठक,आशु गुप्ता,दुर्गेश सहित अन्य ने सुबह -सुबह कांवड़ियों को फल वितरित किए।

» न्यूज गैलरी

ग्वालियर में बनेगा द्वारकाधीश लोक

ग्वालियर । ग्वालियर में द्वारकाधीश लोक बनाने की तैयारी शुरू हो गई है। थाटीपुर में 125 साल पुराने द्वारकाधीश मंदिर को 101 करोड़ की धनराशि एकत्रित कर महाकाल लोक की तर्ज पर, द्वारकाधीश लोक बनाया जाएगा।श्री द्वारकाधीश ठाकुर जी महाराज संस्था के अध्यक्ष पारस जैन का कहना है, कि यह निर्माण गुप्त चंदे और दान से प्राप्त राशि से कराया जाएगा। अहमदाबाद के आर्किटेक्ट द्वारा इसकी डिजाइन तैयार की गई है। इस वर्ष की दीपावली में इसका शिलान्यास करने की योजना है। 24 माह के अंदर निर्माण पूर्ण किया जाएगा।द्वारकाधीश लोक में,द्वारकाधीश के साथ-साथ भगवान गणेश और राम दरबार की भी स्थापना होगी। वृंदावन के प्रेम मंदिर की तर्ज पर एक ही मंदिर के अंदर,गौरी-शंकर, गणेश, शिव पंचायत और राम जानकी का दरबार होगा। यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था,भागवत कथा के लिए हाल, लाइब्रेरी, पार्किंग इत्यादि की व्यवस्था भी की जाएगी। द्वारकाधीश लोक का निर्माण भक्तों के दान और गुप्त दान से होगा।

9 अगस्त को कांग्रेस का विशाल धरना प्रदर्शन और तहसील घेराव

सिरोंज (ईएमएस)। कुरवाई विधानसभा क्षेत्र की कांग्रेस नेत्री और जिला पंचायत सदस्य रानी अहिरवार ने बताया कि 9 अगस्त 2023 बुधवार को कुरवाई बस स्टैंड पर दोपहर 12ः00 बजे भाजपा सरकार की तानाशाही महिलाओं अनुसूचित जाति जनजाति पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध एवं स्थानीय जन समस्याओं एवं मांगों को लेकर कांग्रेस पार्टी के बैनर तले विशाल धरना प्रदर्शन किया जाएगा। एवं तहसील कार्यालय का घेराव किया जाएगा । रानी अहिरवार ने कुरवाई विधानसभा क्षेत्र के सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं आम जनता से आंदोलन में भाग लेने की अपील भी की आंदोलन के मुख्य मुद्दे अघोषित बिजली कटौती कुरवाई एवं पठारी की कृषि उपज मंडी का सुचारू रूप से संचालन पठारी में शासकीय महाविद्यालय की स्वीकृति सड़कों पर घूम रहे गोवंश का संरक्षण एवं उचित व्यवस्था मंडी बामोरा रेल फाटक का शीघ्र निर्माण गांव-गांव बिकने वाली अवैध शराब बंद करने ग्राम पंचायत पठारी को नगर परिषद का दर्जा दिए जाने एवं मणिपुर सहित पूरे देश एवं प्रदेश में महिलाओं अनुसूचित जाति जनजाति पर हो रहे अन्याय और अत्याचार को रोकने एवं अपराधियों का कड़ी कार्यवाही करने की मांगों को लेकर एसडीएम कुरवाई को राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया जाएगा

श्री विश्वकर्मा महापंचायत संगठन के जिला बैठक एवं प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

सिरोंज (ईएमएस)। श्री विश्वकर्मा महापंचायत संगठन मंडल सिरोंज में प्रतिभावान बच्चों का सम्मान समारोह किया गया। इस अवसर पर श्री विश्वकर्मा महापंचायत संगठन के प्रदेश अध्यक्ष प्रेम नारायण विश्वकर्मा प्रदेश महामंत्री दीपक विश्वकर्मा प्रदेश मीडिया प्रभारी रामराज विश्वकर्मा विदिशा जिला अध्यक्ष राम किशोर विश्वकर्मा युवा जिला अध्यक्ष देवेन्द विश्वकर्मा मंडल अध्यक्ष बब्लू विश्वकर्मा युवा मंडल अध्यक्ष राकेश विश्वकर्मा महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती रेखा विश्वकर्मा ने विश्वकर्मा समाज के प्रतिभावान बच्चों का सम्मान किया ।और इस अवसर पर बच्चों ने अपने अनुभव भी शेयर किए कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में जन जागरण कर समाज के अधिकार दिलाने का संकल्प लिया विश्वकर्मा महापंचायत संगठन समाज को सत्ता और संगठन में भागीदारी के लिए संकल्पित है।

दतिया में गोलीबारी की घटना-गोली लगने से किशोर हुआ घायल

दतिया, यश भारत। चिरुला थाना अंतर्गत देर रात डगरई टोल प्लाजा के पास बाइक सवार अज्ञात बदमाशों ने दो लोगो पर फायरिंग कर दी। घटना में गोली एक किशोर को लग गई। जिसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है। वही मामले को लेकर पुलिस जांच में जुट गई है। घटना केंद्रीय विद्यालय के ठीक सामने की रविवार रात साढे 11 बजे की बताई गई है।पुलिस के मुताबिक, सिद्धार्थ कॉलोनी निवासी 17 वर्षीय किशोर देव

कांग्रेस विधायक उमंग सिंघार ने उठाई आदिवासी सीएम बनाने की मांग

कांतिलाल भूरिया को चुनाव कमेटी का प्रमुख बनाने की जगह , मुख्यमंत्री का चेहरा पेश हो

बदनावर, धार, । कांग्रेस विधायक उमंग सिंघार ने धार जिले के बदनावर में आयोजित सभा में कहा कि काफी समय की प्रतीक्षा थी, किंतु आप सब लोग फिर भी जाग गए, लेकिन 70 साल हो गए आदिवासी भाइयों को जागने में। आपकी ताकत से सरकारें हिलने लगी हैं। जब तक मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री आदिवासी नहीं बने घर मत बैठना, आप चाहते हो कि मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री आदिवासी बने। विधायक सिंघार ने कहा कि कांतिलाल भूरिया को चुनाव कमेटी का प्रमुख बना दिया, अगर आपको बनाना है तो उन्हें प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाओ।

इतिहास आदिवासियों का लिखा जाता है

गंधवानी विधायक उमंग सिंघार ने प्रसिद्ध धार्मिक स्थल कोटेश्वर महादेव धाम में आदिवासी जननायक टंट्या मामा की प्रतिमा अनावरण करने पहुंचे थे । उन्होंने आगे कहा कि कहानियां तो राजा-महाराजाओं की लिखी जाती है । इतिहास तो आदिवासियों का लिखा जाता है । आदिवासी भाई मुगलों और राजपूतों को रास्ता दिखाते थे । अंग्रेजों ने हमारी जातियों को बैन कर दिया था। अंग्रेज चले गए, परंतु अभी सत्ता बाकी है आदिवासियों की ।

कई बड़े राजनीतिक लोग हम आदिवासियों को आपस में बांटने में लगे हैं, किंतु इस लोकतंत्र की व्यवस्था में हर समाज को हमें सम्मान देना है। माछलिया घाट से लेकर बदनावर विधानसभा हमारी है। बदनावर के आदिवासियों को भी सलामी देनी पड़ेगी, जब यहां का नया विधायक बनेगा।बदनावर विधानसभा सीट पर किस प्रकार आदिवासियों का शोषण हो रहा है, वह चिंता का विषय है। आदिवासी तीर-कमान और फालिया भी रखता है। कोटेश्वर में समारोहपूर्वक टंट्या मामा की प्रतिमा का अनावरण किया गया। शुरुआत में विधायक सिंघार ने कोटेश्वर महादेव के दर्शन कर पूजा-अर्चना की।

बड़ी संख्या में शामिल हुए बाइक सवार इससे पूर्व विश्व आदिवासी दिवस के साप्ताहिक महोत्सव के अंतर्गत आदिवासी युवा प्रभाग द्वारा निकाले जा रहे रोड शो की शुरुआत ग्राम पांजापाड़ा से हुई। इसमें बड़ी संख्या में बाइक सवार कार्यकर्ता शामिल हुए। हाथों में ध्वज थामे एक तीर-एक कमान आदिवासी एक समान आदि नारे लगाते हुए चल रहे थे। इस दौरान गांव-गांव में लोगों द्वारा पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया।किशनपुरा, बिड़वाल, कोद, रेशमगारा, बखतगढ़, सकतली, घटगारा होते हुए काफिला यहां पहुंचा। बैजनाथ महादेव दर्शन के पश्चात सांतरूण्डा चौराहा, केंद्र फाटा, संदला, तिलगारा, जाबड़ा फाटा होते हुए बोरदा में टंट्या माता की प्रतिमा अनावरण के साथ रोड शो का समापन हुआ। इस दौरान कमलसिंह पटेल, निरंजनसिंह पिटगारा, डा. अभिषेकसिंह राठौर, शरदसिंह सिसौदिया, परितोषसिंह राठौर, अभिषेक टल्ला मोदी, कैलाश गुप्ता, अश्विन पाटीदार, दिलीप निनामा, संजय भूरिया, मनोहर मकवाना आदि साथ थे।

बीएमएचआरसी में आएंगे नेफ्रोलाजिस्ट

भोपाल, यश भारत । भोपाल मेमोरियल हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर (बीएमएचआरसी) में नेफ्रोलाजी विभाग की प्रभारी डा सीमा नवेद ने किडनी की बीमारी से जूझ रहे और संस्थान में डायलिसिस कराने वाले मरीजों से मुलाकात की। उन्होंने उनकी समस्याओं को ध्यान से सुना। डा सीमा नवेद ने कहा कि बीएमएचआरसी निदेशक डा मनीषा श्रीवास्तव से इस संबंध में चर्चा हुई है और उन्होंने किडनी के मरीजों की समस्याओं को जल्द से जल्द सुलझाने का आश्वासन दिया है। बीएमएचआरसी निदेशक डा मनीषा श्रीवास्तव ने बताया कि बतौर विजिटिंग फैकल्टी एक किडनी रोग विशेषज्ञ अगले हफ्ते से बीएमएचआरसी में अपनी सेवाएं देना शुरू कर देंगे।

किडनी के मरीजों की परेशानी दूर होगी

डायलिसिस रूम में एक डॉक्टर और एक स्टाफ नर्स हर वक्त उपलब्ध रहेंगे। नेफ्रोलाजी वार्ड में जरूरतमंद मरीजों को भर्ती किया जाएगा। उनके लिए दवा की कोई कमी नहीं होने दी जाएगी। डायलिसिस कराने वाले जिन मरीजों को आवश्यकता होगी, उन्हें एम्बुलेंस उपलब्ध कराई जाएगी। इस बैठक में भोपाल ग्रुप फार इन्फोर्मेशन एंड एक्शन की सदस्य रचना ढिंगरा भी शामिल थी। ऊ?लेखनीय है कि? किडनी रोग का नेफ्रोलाजी विभाग की हालत खराब थी । इससे किडनी रोगों से परेशान गैस पीड़ितों को इलाज के लिए परेशान होना पड़ रहा है। इस कारण मरीजों के स?वजनों की कई बार अस?तपाल प्रबंधन से झगड़े की नौबत आ जाती थी।

गड्ढों में गुम हो गई राजधानी की सड़कें

सड़कों के मेंटेनेंस पर हर वर्ष 200 करोड़ रुपये खर्च

भोपाल। राजधानी में इन दिनों सड़कों से गुजरना किसी जोखिम से कम नहीं है। अब तक शहर में झमाझम बारिश का इंतजार है, लेकिन सड़कें अभी से जवाब देने लगी है। सड़कों का ये हाल तब है, जबकि इन्हें बनाने और इनके मेंटेनेंस पर हर साल करीब 200 करोड़ रुपए खर्च किए जाते हैं। इसके बावजूद सड़कें गड्ढों में गुम हो गई हैं। इन पर आधा से दो फीट तक गहरे और चौड़े गड्ढे हो गए हैं।

इधर, गड्ढों को भरने के लिए नगर निगम मिट्टी डलवा रहा है, जो कि बारिश थमने के बाद वाहन चालकों की मुसीबत धूल के रूप में बढ़ा रही हैं। जानकारी के मुताबिक, बारिश की वजह से 500 किमी से ज्यादा सड़कें जर्जर हुई है। वहीं, पहले से जर्जर एक हजार किमी सड़कें और भी खस्ताहाल हो गई हैं। जिन सड़कों की हालत ज्यादा खराब है, उनमें होशंगाबाद रोड, बावड़िया कलां, हमीदिया रोड करोंद, अयोध्या व्यापारा, रायसेन रोड, इंद्रपुरी, आनंद नगर, भेल, सुभाष नगर,

छोला, अशोका गार्डन, चुनाभट्टी आदि इलाके शामिल हैं। इधर, सड़कों को लेकर सियासत भी गरमा गई है। गड्ढों में गायब हो चुकी सड़कों को लेकर विपक्ष %%शहर सरकार को घेरने की रणनीति बना रहा है।

इन सड़कों की हालत खराब

हमीदिया रोड पर भारत टॉकीज, अल्पना तिराहा, सब्जी मंडी, छोला एरिया के हाल बुरे हैं। यहां पैदल चलना तक मुश्किल हो रहा है। तीन मोहरा रोड- एजेंसी - पीडब्ल्यूडी ट्रैफिक शाहजहांनाबाद स्थित तीन मोहरा रोड से वाहन चालक हिचकोले खाते हुए गुजरते हैं। यहां एलबीएस अस्पताल से ताजुल मसाजिद तक सैकड़ों गड्ढे हैं, जिन्हें कोपरा डालकर भरा जा रहा है। ये सड़क एक साल पहले बनी थी।

होशंगाबाद रोड-

होशंगाबाद रोड पर वीर सावरकर ब्रिज के पास सड़क का बड़ा हिस्सा उखड़ गया है। बीयू तक कई जगह पर गड्ढे हैं, मिसरोद के पास सड़क खराब है।

करोंद मंडी रोड

पीपुल्स मेडिकल कालेज से यूका की ओर 4 किमी लंबी सड़क पीडब्ल्यूडी संभाग-2 में आती है। 2016-2017 में बनी थी। गारंटी पीरियड की सड़क पर गल्ला मंडी के सामने 200 मीटर दायरे में 50 से ज्यादा बड़े गड्ढे हैं।

प्रभात पेट्रोल पंप से आनंद नगर एजेंसी -

नेशनल हाईवे पर पांच किमी सड़क में ढेरों गड्ढे हैं। अप्सरा काम्पलेक्स से इंडस्ट्रियल गेट तक सड़क की खुदाई के बाद रेस्टोरेशन के कारण कीचड़ है। अप्सरा से आनंद नगर पेट्रोल पंप तक दोनों ओर की सड़क खराब है।

महापंचायत में जुटेंगे प्रदेश और अन्य राज्यों के ट्रांसपोर्टर

इंदौर,यश भारत । मध्य प्रदेश की सीमाओं पर बने परिवहन जांच चौकी पर वाणिज्यिक वाहनों से होने वाली अवैध वसूली को रोकने के लिए ट्रांसपोर्टर लामबंद हो चुके हैं। ट्रांसपोर्टरों ने सरकार को 15 अगस्त तक सभी जांच चौकी बंद करने की अंतिम चेतावनी देते हुए बड़े आंदोलन की तैयारी शुरू कर दी है। इसकी रणनीति बनाने के लिए 8 अगस्त को भोपाल में परिवहन समुदायों की महापंचायत बुलाई गई है। इसमें प्रदेश के सभी जिलों के साथ ही अन्य राज्यों के ट्रांसपोर्टर एसोसिएशन के पदाधिकारी शामिल होंगे। इंदौर में रविवार को ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के पदाधिकारियों की बैठक हुई। इसमें भोपाल के कार्यक्रम में शामिल होने को लेकर रणनीति बनाई गई। आल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस एवं पड़ोसी राज्य और मध्य प्रदेश के 52 जिलों के परिवहन समुदायों की महापंचायत 8 अगस्त को हिंदी भवन पालीटेक्निक चौराहा श्यामला हिल्स, भोपाल में होने जा रही है। इसकी जानकारी देने के लिए इंदौर ट्रक आपरेटर एंड ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन द्वारा इंदौर शहर के सभी परिवहनकर्ता के साथ, खालसा बाग गुरुद्वारा, चोइथराम अस्पताल के सामने बैठक रखी गई। इसमें ढाई सौ से अधिक सदस्य उपस्थित हुए। इसमें बताया गया कि मध्य प्रदेश परिवहन जांच चौकी पर हो रही अवैध वसूली को 15 अगस्त तक राज्य सरकार बंद करे। यदि राज्य सरकार जांच चौकी बंद नहीं करती है, तो 16 अगस्त के बाद मप्र में आंदोलन शुरू किया जाएगा।इंदौर ट्रक एंड ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के सीएल मुकाती एवं आल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस के पूर्व उपाध्य विजय कालरा ने बताया कि महापंचायत में ज्यादा से ज्यादा सदस्य इंदौर से शामिल हो इसकी रूपरेखा बनाई गई।

राज्य वनसेवा परीक्षा-2022 में पद बढ़ने की उम्मीद खत्म

भोपाल यशभारत। राज्य शासन की ओर से रिक्तियां बढ़ाने को लेकर मप्र लोकसेवा आयोग (पीएससी) को जवाब नहीं मिला है। पद बढ़ने की उम्मीद में पीएससी ने 20 दिनों से ज्यादा समय से राज्य वनसेवा परीक्षा-2022 का परिणाम रोक रखा है। राज्य वनसेवा परीक्षा-2022 में पद बढ़ने की उम्मीद अब खत्म हो गई है। अब मप्र लोकसेवा आयोग ने परिणाम जारी करने की तैयारी कर ली है। राज्यसेवा परीक्षा और राज्य वनसेवा परीक्षा का विज्ञापन से लेकर आवेदन तक साथ होते हैं। दोनों परीक्षाएं भी एकसाथ होती हैं और परिणाम भी एकसाथ जारी होते हैं। पीएससी ने संभवत-पहली बार एक परीक्षा का परिणाम जारी कर दूसरी का रोका था। पीएससी के निर्णय पर अभ्यर्थियों के बीच संदेह भी पैदा हुआ था। हालांकि पीएससी ने साफ कर दिया है कि अभ्यर्थियों के लाभ के लिए पद बढ़ने की उम्मीद और कोशिश के कारण रिजल्ट रोका गया है। राज्य वनसेवा परीक्षा-2022 में महज 15 पद घोषित किए गए हैं। ये सभी पद परियोजना क्षेत्रपाल के हैं, जबकि दोनों उच्च श्रेणी यानी सहायक वन संरक्षक और वन क्षेत्रपाल (रेंजर) का एक भी पद घोषित नहीं किया था। पीएससी ने दिसंबर में परीक्षा के विज्ञापन के साथ ही सूचना जारी की थी कि विभाग ने अब तक इन दोनों पदों का मांगपत्र नहीं दिया है। यदि प्रारंभिक परीक्षा का परिणाम जारी होने तक इन पदों की रिक्तियां पीएससी को मिल जाती हैं। तो पदों की संख्या में वृद्धि कर ये पद बढ़ा दिए जाएंगे।

मोतीमहल में बनेगा नया परिषद भवन, कटारे फार्म पर शिफ्ट होगी जमुना बाग नर्सरी

ग्वालियर, यश भारत। मोतीमहल स्थित जमुना बाग नर्सरी को अब गोले का मंदिर स्थित कटारे फार्म हाउस पर शिफ्ट किया जाएगा। वहीं नर्सरी की जमीन पर नगर निगम परिषद का नया भवन तैयार किया जाएगा, जिसमें कम से कम 100 जनप्रतिनिधियों के बैठने की जगह होगी।

इसके अलावा इस भवन में सभापति, महापौर, एमआइसी सदस्यों, निगमायुक्त, अपर आयुक्त परिषद, परिषद सेक्रेटरी व स्टाफ के बैठने की भी व्यवस्था की जाएगी। इसके लिए पिछले दिनों सभापति मनोज सिंह तोमर और नगर निगम आयुक्त हर्ष सिंह द्वारा किए गए निरीक्षण के दौरान सैद्धांतिक सहमति बन गई थी।

यहां नया भवन चार मंजिला तैयार किया जाएगा। हालांकि सिरोल और सचिन तेंदुलकर मार्ग पर निगम की भूमि पर भी परिषद भवन बनाने की चर्चा की गई थी, लेकिन यह शहर के बाहरी इलाके में होने पर नर्सरी को चुना गया है। जलविहार स्थित परिषद में जनप्रतिनिधियों की संख्या बढ़ने के कारण अब बैठक व्यवस्था में परेशानी हाने लगी है। वर्तमान में चुने हुए 67 सदस्यों के अलावा सांसद, विधायक अथवा उनके द्वारा मनोनीत किए गए प्रतिनिधि भी सदन बैठ रहे हैं। परिषद में 66 वार्ड में से 35 वार्ड में महिला प्रत्याशी जीतकर पार्षद बनी हैं और बैठकों में उनके पति भी पहुंचते हैं। पूर्व में सभापति मनोज सिंह तोमर ने भी निगमायुक्त को पत्र लिखा था कि शासन द्वारा 12 एल्डरमैन भी नियुक्त किए जाएंगे। नई जनगणना के आधार पर वार्डो की संख्या में भी इजाफा हो सकता है। ऐसे में सदस्यों की संख्या 100 तक पहुंच सकती है। इसके लिए जरूरी है कि नया परिषद भवन तैयार किया जाए। गत बुधवार को यही संभावना तलाशने के लिए संयुक्त रूप से निरीक्षण किया गया था। चूंकि जमुना बाग नर्सरी की जमीन का उपयोग व्यवसायिक नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा यहां तीन तरफ से रोड भी मिल रही है। इस कारण अब यहां नया परिषद भवन तैयार किया जाएगा।

पं.धीरेंद्र की आरती पर कांग्रेस नेता ने कमलनाथ को घेरा

भोपाल, यश भारत। छिंदवाड़ा में पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की कथा को लेकर कांग्रेस में मतभेद सामने आए हैं। कांग्रेस के सीनियर लीडर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने अपनी ही पार्टी के नेताओं को घेरा है। उन्होंने ट्वीट किया, %भाजपा के स्टार प्रचारक की आरती उतारना कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को शोभा नहीं देता।छिंदवाड़ा के सिमरिया में पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री रामकथा कर रहे हैं। 5 से 7 अगस्त तक चलने वाली कथा के मुख्य यजमान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ के बेटे और छिंदवाड़ा से सांसद नकुलनाथ हैं। 5 अगस्त को कथा के शुभारंभ से पहले कमलनाथ ने पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की आरती की थी।पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के छिंदवाड़ा आगमन पर कमलनाथ ने आरती की थी। इसे लेकर अब उनकी ही पार्टी के नेता प्रमोद कृष्णम ने आपत्ति जताई है।पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के छिंदवाड़ा आगमन पर कमलनाथ ने आरती की थी। इसे लेकर अब उनकी ही पार्टी के नेता प्रमोद कृष्णम ने आपत्ति जताई है।सेक्यूलरिज्म के ध्वजवाहक जयराम रमेश, दिग्विजय, खड़गे खामोश हैंप्रमोद कृष्णम ने ट्विटर पर लिखा, %मुसलमानों के ऊपर बुलडोजर चढ़ाने और ऋस्त के एजेंडे हिंदू राष्ट्र की खुल्लम-खुल्ला वकालत कर संविधान की धज्जियां उड़ाने वाले भाजपा के स्टार प्रचारक की आरती उतारना कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को शोभा नहीं देता। आज रो रही होगी गांधी की आत्मा, तड़प रहे होंगे ।

सुविधा आनलाइन आवेदन आधार कार्ड के डिजी लाकर से अपलोड होने के बाद ही मान्य होगा

पासपोर्ट बनवाने दस्तावेज लेकर न जाएं, डिजी लाकर से सत्यापन कराएं

ग्वालियर। पासपोर्ट बनवाने के लिए आवेदक को मूल दस्तावेज साथ लेकर जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब दस्तावेज वेरिफिकेशन (सत्यापन) का काम डिजी लाकर की मदद से होगा। सभी पासपोर्ट केंद्रों पर शनिवार पांच अगस्त से यह सुविधा लागू कर दी गई है। आनलाइन आवेदन आधार कार्ड के डिजी लाकर से अपलोड होने के बाद ही मान्य किया जाएगा, अन्यथा आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। आधार कार्ड में हो रहे फर्जीवाड़े को रोकने के उद्देश्य से यह बदलाव किया गया है।

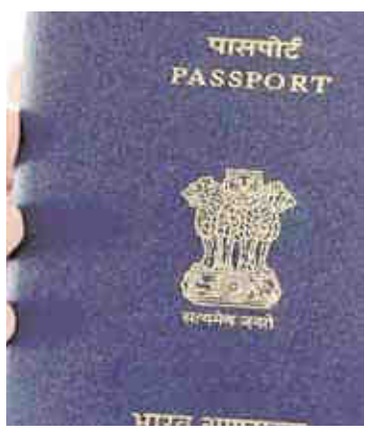

पासपोर्ट अधिकारियों के अनुसार डिजी लाकर में दस्तावेज संबंधित विभाग द्वारा आटो मोड में अपलोड किए जाते हैं, इसलिए यह दस्तावेज वेरिफाई होते हैं। इनमें कोई छेड़छाड़ या बदलाव नहीं किया जा सकता। आवेदक के फार्म का जब वेरिफिकेशन होगा तो उसमें यही देखा जाएगा कि जो दस्तावेज अपलोड किए गए वह डिजी लाकर से हैं तो प्रोसेस आगे बढ़ जाएगी। यदि आधार कार्ड छोड़कर अन्य दस्तावेज डिजी लाकर से अपलोड नहीं है तो उनका वेरिफिकेशन मूल दस्तावेज से किया जा सकता है।

इसलिए लागू की गई व्यवस्था

पासपोर्ट विभाग के अनुसार अभी पासपोर्ट बनाने के लिए पासपोर्ट सेवा केंद्रों पर वेरिफिकेशन के लिए मूल आधार कार्ड लेकर जाना पड़ता है। कई आवेदक फर्जी आधार कार्ड बनाकर माता-पिता के नाम के अलावा जन्मतिथि में भी बदलाव कर लेते हैं। कई लोग मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से आधार अपलोड करके पासपोर्ट बनाने के लिए आधार कार्ड दे देते हैं। ऐसे में असली और नकली आधार कार्ड का पता करना मुश्किल हो जाता है। देश में कई फर्जी आधार कार्ड से बने पासपोर्ट पकड़े जा रहे हैं, जिसे देखते हुए विभाग ने यह व्यवस्था लागू की है।

डिजी लाकर में ऐसे अपलोड करें दस्तावेज

डिजीलाकर इंडियन इलेक्ट्रानिक्स और इंफार्मेशन मंत्रालय की ओर से प्रदान की जाने वाली एक डिजीटल वालेट सर्विस है। इसके कोई भी इसमें सरकार की ओर से जारी दस्तावेज आधार कार्ड, पेन कार्ड, मार्कशीट आदि को सुरक्षित तरीके से रख सकता है और जरूरत पड़ने पर उपयोग कर सकता हैं। डिजी लाकर बनाने के लिए डिजी लाकर की आधिकारिक वेबसाइट पर वेबसाइट के होम पेज पर साइन अप करना होगा। इसके बाद खुले नए पेज पेज पर जरूरी जानकारी भरने के बाद आपके आधार कार्ड से जुड़े मोबाइल नंबर पर मोबाइल नंबर पर एक ओटीपी आएगा। ओटीपी दर्ज करते ही आपका एकाउंट बन जाएगा। इसके बाद इसमें दस्तावेज अपलोड किए जा सकते हैं। मोबाइल में डिजिटल लाकर का अकाउंट बनाने के लिए डिजिटल लाकर ऐप का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

लापरवाही से हादसा, कुंड में कार सहित गिरी बच्ची, बचाने के बाद पिता ने लगाई छलांग, ग्रामीणों ने दोनों को बचाया

इन्दौर (ईएमएस) पिकनिक मनाने गए परिवार की कार कुंड में गिर गई। कार में 12 साल की बच्ची थी, जिसे बचाने के उसके पिता भी कुंड में कूद पड़े आसपास मौजूद लोगों ने कुंड में छलांग लगाकर पिताङ्क पुत्री को बचाया। दोनों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।घटना इंदौर के पास टूरिस्ट स्पॉट लोधिया कुंड की है । जानकारी अनुसार सिमरोल से करीब 20 किमी दूर लोधिया कुंड में यह हादसा उस समय हुआ जब कुंड के ठीक मुहाने पर बगैर लॉक किए कार को खड़ा कर छोड़ दिया गया था। बिजलीपुर निवासी पति पत्नी अपनी बेटी के साथ वहां घूमने गए थे। इसके बाद पिता कार को वहीं कुंड के किनारे ही खड़ी कर और हैंड ब्रेक लगाए बगैर पत्नी के साथ नीचे उतर गए। 12 साल की बेटी अकेली कार में थी। तभी अचानक कार फिसलन के कारण कुंड की ओर फिसलने लगी और देखते ही देखते कार कुंड में बोनट के बल पर जा गिरी। कार को लुढ़कने से रोकने और बेटी को बचाने के लिए पिता भी कार के पीछे-पीछे कुंड में कूद गए।

» न्यूज गैलरी

मुख्यमंत्री जनसेवा मित्र रच रहे नया इतिहास -जनसेवा मित्र

तेंदूखेड़ा, यशभारत। मामा के बनकर जनसेवा मित्र तैयार हुए हम बूट कैंप-2 में विकास और प्रगति इतिहास रचने तैयार हुए हम- ज्यादा ना जानों अंश जान लो उम्मीदों की उम्मीद हुए हम जनसेवा मित्र तैयार हुए हम- आम आदमी से जान लिया गांव गांव को हमने हर योजना के लिए जागरूक किया जनसेवा मित्र तैयार हुए हम- संघर्षों की बुनियाद है शिवराज मामा के हम सब जनसेवा मित्र है - हर योजना का आगाज है जनसेवा मित्र दे रहे लोगों को योजनाओं का लाभ है शिवराज मामा के जनसेवा मित्र है हम- शासन प्रशासन के साथ कदम मिलाकर दिया हर योजना को नये नये पल मिल गये मामा को जनसेवा मित्रों का क्या है कहना- आत्मविश्वास से भरपूर सदैव रहना हर अधिकारी से बात करते रहना जनसेवा मित्र है हम- हम लोगो की उम्मीदों को पूरा करते हैं यू तो सफर आसान नहीं है फिर भी हम हर सफर को आसान करते हैं जनसेवा मित्र है हम-जनसेवा मित्र है हम जनता की सेवा करते हैं हर वक़्त बढ़े विश्व से जन सेवा करते हैं मामाजी के जनसेवा मित्र हम- शिवराज मामा के जनसेवा मित्र है हम जनसेवा मित्र है हम आंधियों से टकराना जानते हैं हम तूफानों से लड़ना जानते हैं हम इसलिए देश के दिल में रहते हैं हम जनसेवा मित्र हम-आंधियों को जिद है बिजलियां गिराने की मुझे भी जिद है लोगों तक योजनाओं की जानकारी बताने की क्योंकि जनसेवा मित्र हम- हिम्मत और हौंसले बुलन्द हैं खड़ा हूं अभी भी गिरा नही हूं अभी जंग बाकी है और मैं हारा नही हूं मैं जनसेवा मित्र हूं- मामा का कहना है डरना नही है मैं बैठा हूं स्वामी विवेकानंद कहते हैं तुम केवल साढ़े तीन हाथ के हाड़ मांस के पुतले नहीं हो तुम अनंत शक्तियों का भंडार हो दुनिया में हर काम आप कर सकते हैं बनकर जनसेवा मित्र है।

मेहरा समाज की बैठक हुई संपन्न

गोटेगांव, यशभारत। विगत दिवस स्थानीय मेहरा समाज संगठन की बैठक मां नर्मदा मंदिर के सामने बुधराज मेहरा के निवास स्थान पर संपन्न हुई सर्वप्रथम माँ सरस्वती मैयाजी एवं बाबा साहेब भीमराव अंबेडकरजी के तैलचित्र पर माल्यार्पण कर पूजन अर्चन करने की पश्चात समाज में व्याप्त कुरुति गंगा पूजन(गंगाजली भोजन)को पूर्ण रुप से खत्म करने का निर्णय लेने के उपरांत वर्तमान स्थिति में मेहरा समाज द्वारा राजनीतिक परिपेक्ष में मेहरा समाज से टिकट के संबंध में सामाजिक बंधुओं द्वारा गहन विचार मंथन किया गयाकि आगामी विधान सभा चुनाव में स्थानीय व मेहरा समाज को टिकट लेने की रणनीति तैय्यार की गयी इस अवसर पर जिलाध्यक्ष महेश झारिया बुधराज झारिया राजेश झारिया हरिगोविंद झारिया प्रमोद झारिया चंद्रप्रकाश झारिया मानसिंह झारिया सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

मनमानी- तेन्दूखेड़ा वन परिक्षेत्र की तिपनी बीट का मामला रेंजर और एसडीओ के पास नहीं मौके पर पहुंचने का समय, बात करने को भी तैयार नहीं अधिकारी

वन संपदा को नष्ट करने में लगे हुए हैं तेन्दूखेड़ा के वन कर्मचारी

तेन्दूखेड़ा/दमोह! तेन्दूखेड़ा वन परिक्षेत्र में यहाँ का पदस्थ स्टाप लगातार वन संपदा को नष्ट करने लगा हुआ है। जिस पर रेंजर, एसडीओ पर्दा डालने का पूरा प्रयास कर रहे हैं और यदि कोई जानकारी मीडिया को लगती है तो उसे भी झूठी जानकारी देकर गुमराह कर रहे हैं। ऐसे खेड़ा वनपरिक्षेत्र में एक नहीं बल्कि कई मामले है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण मामला ऐसा है जिसके सामने आने के बाद रेंजर और एसडीओ ने तो मीडिया के फोन उठाने बंद कर दिये।

तेंदूखेड़ा बन परिक्षेत्र की तिपनी बीट में आरएफ 187 में बास प्लांटेशन वर्ष 2021 में आया था, यह प्लांटेशन जिस जगह पर निर्माण होना था उस स्थान के पास से एक नाला निकला था और उस स्थान की डहरा के नाम से जाना जाता है। यह तिपनी ग्राम से लगभग दो किमी दूर है लेकिन प्लांटेशन वहाँ पर नहीं है। जब प्लाटेशन ही नहीं है तो इसमें लगने वाले 12 हजार 500 बास के पौधे कहाँ रोपित हुए हैं, इसका किसी के पास कोई जवाब नहीं है। यशभारत द्वारा जब कुछ दिन पहले मामले को लेकर बीटगार्ड, सर्किल आफिसर, रेंजर, एसडीओ से बात की थी तो उस समय बोटगार्ड कह रहे थे कि बना नहीं है बनना है। वहीं सर्किल आफिसर बगदरी चौकी के पीछे का पता बता रहे थे, जबकि रेजर मेघा पटेल और एसडीओ रेखा पटेल तिपनी में प्लांटेशन होने की पुष्टि कर रही थी, लेकिन मौके पर कोई भी जाने को तैयार नहीं था। जानकारी अनुसार रेंजर और एसडीओ मौके पर जाने को तैयार नहीं, उन्होंने एक टीम गठित की है। शिकायतकर्ता का कहना है जांच उस चीज की होती है जी होती है पहले अधिकारी यह तो बताये जांच किस चीज की करा रहे हैं।

यह बोले शिकायतकर्ता

वरिष्ठ समाजसेवी मदन नामदेव ने बताया कि पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए लोग स्वयं के व्यय से पेड़ खरीद कर जगह-जगह दूषित कर रहे है और लोगों को जागरूक कर रहे है। बन विभाग की जिम्मेदारी है क्योंकि उनको शासन पौधों को सुरक्षित रखने और उनकी निगरानी के लिए करोड़ों रुपया प्रतिवर्ष फंड के रूप में देती है। वर्ष 2021 में रोजगार गारंटी से तिपनी बीट के कक्ष क्रमांक 187 में बनया जाना था, जिसके लिए मनरेगा योजना से 17 लाख 52 हजार की राशि आई थे, उस राशि से 13 लाख 17 हजार रुपया खर्च हो गया है। मौके पर प्लेटशान नहीं है यदि स्थान बदला गया है तो जिसके आदेश से और उस प्लांटेशन में लगे पौधों की वर्ष तक निवाई होनी थी, जो पौधे नष्ट ही गये उनका इस वर्ष नया रोपण होना था। यदि किस विभाग का कर्मचारी लापरवाहीकर्ता है तो उसकी निगरानी के लिए बड़े अधिकारी होते है, लेकिन रेंजर और एसडीओ आज तक यह पता कर पाये कि प्लांटेशन कहाँ बन हुआ है। रेंजर ने सीएम राइज स्कूल के बच्चों को बताया पौधों का महत्व शिकायतकर्ता रेंजर और एसडीओ कार्यालय के चक्कर लगा रहे है उनकी माग है कि वर्ष 2021 मे जो प्लटेशन रोजगार गारंटी से निर्माण किया गया. है वह कहां पर है लेकिन अधिकारी हमेशा जांच की बात कर रहे है। मौके पर जाने को कोई तैयार नहीं है, उनका कहना है कि कार्य अधिक है इसलिए हम जांच करवाएंगे मौके पर जाना संभव नहीं है। वहीं धानिवार को तेंदूखेड़ा रेंजर मेघा पटेल स्टाप के साथ सीएम राज स्कूल पहुंची उन्होंने कहा बच्चों के साथ पौधा रोपण किया, बच्चों को पौधों के महत्व को बताया। सीएम राज स्कूल प्राचार्य हेतराम अहिवाल ने बताया कि शनिवार को रेंजर अपने स्टाप के साथ स्कूल आई थी उन्होंने यहां 10 पौधों का रोपण किया, जिसमे स्कूली बच्चों के साथ शिक्षक मौजूद रहे। वही मामले को लेकर रेजर मेघा पटेल और उपवन मंडल अधिकारी रेखा पटेल से संपर्क करने का प्रयास किया तो उन्होंने अपने फोन नहीं उठाया।

मिशन इंद्रधनुष 5.0 प्रथम चरण का शुभारंभ

पाटन, यशभारत। जबलपुर जिले में सघन मिशन इंद्रधनुष अभियान 5.0 के प्रथम चरण की शुरुआत पाटन विकासखंड के अंतर्गत आने वाले ग्राम बोरिया स्वास्थ्य केंद्र से आज की गई कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यमंत्री के संदेश वाचन से किया गया तत्पश्चात पाटन विधायक अजय विश्नोई ने बच्चों को यू विन की खुराक पिलाई साथ ही टीकाकरण सर्टिफिकेट भी हितग्राहियों को प्रदान किए गए कार्यक्रम के पश्चात नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का विधायक द्वारा भ्रमण किया गया और उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया गया इस दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी संजय मिश्रा जिला टीकाकरण अधिकारी विनोद गुप्ता पाटन खंड चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर आदर्श विश्नोई के साथ समस्त स्वास्थ्य कर्मियों स्टाफ उपस्थित रहा आपको बता दें कि अभियान के तहत टीकाकरण से वंचित जीरो से 5 वर्ष की आयु के बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं का हेडकाउंट सर्वे कर ड्यूलिस्ट अनुसार चिन्हित कर पूर्ण टीकाकरण किया जाएगा वही अभियान का पहला चरण 7 से 12 अगस्त तो दूसरा चरण 11 सितंबर से 16 सितंबर तक होगा

मेरी माटी-मेरा देश अभियान की बैठक हुई संपन्न

गोटेगांव , यशभारत। कलेक्ट्रेट स्थित सभाकक्ष में भारत सरकार के निर्देशानुसार मेरी माटी-मेरा देश अभियान कार्यक्रम आयोजित किया जाना है इसके तहत 9 अगस्त को जिले की प्रत्येक ग्राम पंचायतों में 75 पौधरोपण कर वसुधा वाटिका विकसित किया जाना है कलेक्टर सुश्री ऋजु बाफना ने सभी सीईओ को निर्देश दियेकि यह पौधरोपण ग्राम पंचायतों की शासकीय स्कूलों सामुदायिक भवन आदि में हो तत्पश्चात ग्रीष्मकालीन मूंग उपार्जन की भी समीक्षा की डीएमओ मन्नूलाल कुशरे द्वारा बताया गयाकि आज दिनांक तक 17 हजार 977 पंजीकृत किसानों से लगभग 50 हजार मे. टन मूंग की खरीदी की जा चुकी है 383 करोड़ रुपये की राशि के विरूद्ध 339 करोड़ रुपये की राशि के ईपीओ जनरेट किये जा चुके हैं जिसमें से 258 करोड़ रुपये का भुगतानकिसानों को किया जा चुका है बैठक में पशु चिकित्सा सेवा विभाग के अधिकारी द्वारा बताया गया कि जिले के प्रत्येक विकासखंड में संचालित गौशालाओं में गौवंशों के लिए चारागाह विकसित किये जा रहे हैं इसमें पशुओं के चारे के लिएनेपियर ग्रास लगाई जा रही है।

संतोष साहू का निधन

बघराजी।त्रिपुरी चौक निवासी संतोष साहू उम्र 53 वर्ष का हृदय घात के कारण निधन हो गया है।वह रामकुमार साहू के अनुज थे ।अंत्येष्टि बघराजी स्तिथ श्मशान घाट में सम्पन्न हुई।

जनता का हाल-चाल जानने निकली बाबा महाकाल की सवारी

बरेला, यशभारत। अधिमास श्रावण सोमवार के अवसर पर भूतनाथ धाम से बाबा महाकाल की नगर मैं प्रथम बार शाही सवारी निकाली गई। बड़े शंकर जी स्थित भूतनाथ धाम से बाबा महाकाल की सवारी प्रारंभ होकर नगर नहर किनारे स्थित भैरव बाबा मंदिर से होते हुए किसानी मोहल्ला ,पुरानी चक्की, बाजार मोहल्ला, बस स्टैंड होते हुए संपूर्ण नगर का भ्रमण करते हुए वार्ड नंबर 3 स्थित भूतनाथ धाम में संपन्न हुई. बाबा महाकाल का. जगह जगह पूजा अर्चन किया गया।इस अवसर पर श्रद्धालु भक्तों में अभूतपूर्व उत्साह रहा। सवारी नगर भ्रमण पश्चात भूतनाथ धाम में संपन्न हुई और बड़े ही उत्साह व धूमधाम से महा आरती की गई महा आरती का आयोजन मेकअप आर्टिस्ट प्रशांत माझी एवं परिवार के द्वारा की गई।

कुपात्र को दान किया तो उस पाप के प्रभाव से व्यक्ति बनता है दरिद्र - शंकराचार्य

गोटेगांव, यशभारत। धार्मिक स्थल परमहंसी गंगा आश्रम झोतेश्वर में परमाराध्य परमधर्माधीशउत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु परमपूज्य शंकराचार्य स्वामिश्री अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराजजी ने अपनी अमृत मय वाणी से धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहाकि सनातन धर्म मे दान का बहुत महत्व बताया गया है परन्तु सत्पात्र को दान करने से ही सुफल मिलता है,इसके विपरीत यदि कुपात्र को दान किया तो पुण्य न होकर उसका उल्टा ही हो जाता है,इसलिए दान में सत्पात्र का विचार आवश्यक है,जो सत्पात्र को दान करता है वह उस पुण्य के प्रताप से अगले जन्म में भी धनी के घर उत्पन्न होता है,धनी होकर पुन:दान करता है तो पुन:धनी बनता है,इसी तरह से यदि कुपात्र को दान किया तो उस पाप के प्रभाव से वह दरिद्र बनता है और दरिद्र होकर पाप कार्य मे लग जाता है तो पुन:दरिद्र बनता है यह चक्र ऐसे ही चलता रहता है इसलिए सत्पात्र को दान करें यदि सत्पात्र को खोजना कठिन हो तो सबसे बड़े सत्पात्र भगवान् है भगवान् को अपनी संपत्ति समर्पित कर दो तो इससे अधिक पुण्य और कुछ नही होता भगवान् के पास जाकर लक्ष्मी भी प्रसन्न हो जाती हैं क्योकि लक्ष्मी तो स्वयं भगवान् की ही हैं पूज्य शंकराचार्य जी ने झूठ ना बोलने की बात बताते हुए कहाकि झूठ बोलने से लक्ष्मी नहीं आती जो लोग व्यापार में मुनाफा आदि के लिए झूठ बोलते हैं उनके पास से लक्ष्मी चली जाती है लक्ष्मीजी देवी हैंऔर उन्हें भी सात्विकता और सद्गुण ही पसन्द आते हैं ।

नगना ग्राम से युवाओं की टोली पैदल मैहर धाम हुई रवाना

बेलखाडू यशभारत - श्रावण मास के पावन पर्व पर मैहर की माता शारदा के दर्शन पाने बेलखाडू के समीपि ग्राम नगना के दस युवाओं की टोली आज सुबह पैदल मैहरधाम के लिए रवाना हुई। माता के भक्त ग्राम में एकत्रित हुए। जहां ग्रामीणों ने श्रीफल देकर उन्हें रवाना किया। युवाओं की टोली हर-हर महादेव एवं जय माता दी के जयकारे लगाते हुए पैदल मैहर धाम दर्शन करने के लिए रवाना हुए जिसमें आकाश रजक अनिकेत गौड घनश्याम प्रधान अज्जू ठाकुर रीतेश पटेल संदीप ठाकुर विवेक वर्मन रोहित ठाकुर राहुल ठाकुर अरुण ठाकुर शामिल रहे।

कावड़ यात्रा का कमानिया गेट पर हुआ भव्य स्वागत

पनागर, यशभारत। ग्वारीघाट से, ग्राम मोहरी स्थित शिव धाम मंदिर तक लगभग 50 किलोमीटर तक पर पदयात्रा कावड़ यात्रा का पनागर नगर के हृदय स्थल कमानिया गेट पर आदर्श व्यापारी संघ के तत्वाधान में स्वागत वंदन अभिनंदन एवं प्रसाद वितरण किया गया इस अवसर पर आदर्श व्यापारी संघ के अध्यक्ष पदम मोदी संरक्षक छुट्टन लाल सराफ पनागर विधानसभा क्षेत्र के विधायक पंडित सुशील तिवारी नगर पालिका नगर के अध्यक्ष प्रदीप पटेल भाजपा मंडल अध्यक्ष अंकुर जैन राजेंद्र पटेल गोरे लाल यादव जम्मू यादव महिला मोर्चा की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती मनीषा मोदी श्रीमती दुर्गा ठाकुर संतोष सैनी सर्वेश मिश्रा सुशील बुधरानी हरीश कुकरेजा महेश कुकरेजा मुन्ना गुप्ता आदि आदर्श व्यापारी संघ के सदस्य उपस्थित रहे।

आवारा कुत्तों के हमले से मृत हुई बकरियां

बरेला, यशभारत। वार्ड नंबर 9 निवासी उमेश सोनकर ने बताया कि. उनके यहां 8 बकरे पले हुए थे जो कि कमरे में बंद थे। रात्रि में आवारा कुत्तों के झुंड द्वारा. बकरों पर हमला कर दिया गया जिसके कारण उनके6 बकरे सुबह मृत पाए गये तथा दो घायल मिले। इस संबंध में उन्होंने पुलिस थाने में शिकायत भी की है. जिस पर. पशु चिकित्सा विभाग द्वारा. मृत पाए गये बकरों का पीएम भी कराया गया है। आवारा कुत्तों के द्वारा बकरियों पर हमला करने से लगभग. 40000 का नुकसान हो गया है. उन्होंने जिला प्रशासन से. नुकसान की भरपाई की मांग की है।

जब प्लांटेशन ही नहीं लगा तो कहा रोपे जाएंगे दो हजार पौधे

गड़बड़ी- तेन्दूखेड़ा वन परिक्षेत्र के तिपनी बीट का मामला वन विभाग के शीर्ष अधिकारी एक दूसरे पर डाल रहे जिम्मेदारी सुर्खियों का केंद्र बना तेन्दूखेड़ा वन परिक्षेत्र

तेन्दूखेड़ा/दमोह। जिले के तेंदूखेड़ा वनपरिक्षेत्र इस समय अपने अजीबो गरीब कारनामों के लिए काफी चर्चित है। यहां तिपनी बीट में दो साल पहले लगाया गया प्लांटेशन गायब है और कर्मचारी गोल-मोल जवाब दे रहे हैं तो वहीं आरएफ 187 के नाम पर दो हजार बांस के पौधे मंगाए गए हैं जो कहां लगना है यह तय नहीं है। जो प्लांटेशन गायब है उसके संबंध में सर्किल आफिसर कह रहे हैं कि प्लांटेशन बगदरी चौकी के पीछे बना है और उसी प्लांटेशन को रेंजर, एसडीओ कह रहे हैं कि प्लांटेशन तिपनी में है, लेकिन मौके पर जाने कोई तैयार नहीं है। अब जो दो हजार पौधे नर्सरी से आए हैं यह कहां लगने हैं इसकी भी जानकारी नहीं है। यदि पौधा रोपण या कर्जबल्टी के लिए आये है तो ये कार्य 15 जुलाई के पूर्व होना था जो अब हो रहा है।

दे रहे गोलमोल जवाब

तिपनी वीट में दो वर्षों में दो बांस प्लांटेशन मंजूर हुये थे। पहला प्लांटेशन तिपनी वीट के आरएफ 187 में डहरा नामक स्थान पर बनना था। इसकी लागत 17 लाख 52 हजार रुपये थी और दूसरा प्लांटेशन इसी वीट इसी आरएफ 187 में 18 लाख 60 हजार रुपये का मंजूर हुआ था। 2021 का प्लांटेशन जो डहरा में बनना था उसमें 12500पौधे लगाने थे जबकि 2022 के बांसप्लांटेशन में 15000 पौधे लगाने थे ये प्लांटेशन बगदरी चौकी के पीछे बनाया गया है। पूरी वीट में बांस का केवल एक प्लांटेशन है। जबकि कागजों में दो हैं तो अब सावल ये है कि ये प्लांटेशन कौन सा है। जानकारी लेने पर पता चला है कि बगदरी चौकी के पीछे वाला प्लांटेशन वर्ष 2022 का है जबकि सर्किल आफिसर इसे 2021 का बता रहे हैं। यदि सर्किल आफिसर के अनुसार बगदरी चौकी के पीछे वाला प्लांटेशन वर्ष 2021 का है तो अब सवाल यह उठता है कि वर्ष 2022 का प्लांटेशन कहां पर है। क्योंकि दोनों प्लाटेशन बांस के हैं और दोनों रोजगार गारंटी योजना के तहत मंजूर हुए।सूचना पटल का है अभाव = किसी भी प्लांटेशन की पहचान उसके सूचना पटल या फिर उसमें लगी प्रजाति के पौधों से होती है, लेकिन तिपनी वीट में ऐसा कोई प्लांटेशन नहीं है। जिसमें सूचना पटल या जानकारी लिखी हो। बगदरी चौकी के पीछे जो प्लांटेशन बना है उसमें बांस तो लगे हैं, लेकिन उसमें कोई जानकारी नहीं लिखी है कि यह प्लांटेशन 2021 का है या 2022 का, लेकिन यह बात सही है कि बगदरी चौकी के पीछे आरएफ 187 ही लगता है शायद इसी का फायदा उठाकर निर्माण करने वाले वनकर्मियों ने दो प्लांटेशन में से एक प्लांटेशन को कागज पर ही बना दिया है और अब ज़ब पोल खुली है तो विभाग के अधिकारियों के साथ मीडिया को भी गुमराह कर रहे हैं और इसीलिए दूसरे प्लांटेशन की जानकारी और पता नहीं बता रहे ।

शिव मंदिर पर सावन सोमवार में पार्थिव शिवलिंग निर्माण

ब्राह्मण समाज सिहोरा का आयोजन

सिहोरा, यशभारत। श्रावण मास के पांचवें सोमवार को भी सिद्ध पीठ स्थल शिवमंदिर बाबाताल में ब्राह्मण समाज सिहोरा के तत्वावधान में भक्तों ने पार्थिव शिवलिंग का निर्माण कर उनका पूजन अर्चन किया । सुबह से ही आस्था के केन्द्र शिवमंदिर में भक्तों का तांता लग गया था कोई भोलेनाथ को जल अर्पित कर रहा था तो कोई पार्थिव शिवलिंग निर्माण कर हर हर महादेव के जयकारे लगा रहा था पूरा बाबाताल प्रांगण दोपहर होते होते शिव भक्तों से भर गया था। सभी ने लगभग 45 कोपरों में शिवलिंग निर्माण कर मंदिर में विराजमान भगवान भोलेनाथ के दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त किया।समाज द्वारा आयोजित इस धार्मिक आयोजन की सभी ने भूरी भूरी प्रशंसा की है। समाज के साथ अनेक भक्तों ने शिवलिंग का पूर्ण श्रद्धा भक्ति भाव के साथ नदी में विसर्जन किया। इसके पूर्व निर्मित पार्थिव शिवलिंग का विधिवत पूजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में ब्राह्मण समाज के संरक्षक अश्वनी कुमार पाठक,नंदकुमार परौहा,जय प्रकाश दुबे,अध्यक्ष राकेश पाठक, महामंत्री प्रवीण कुरिया,सूरज पाठक,सुरेन्द्र तिवारी, नरेन्द्र त्रिपाठी,शैलेन्द्र दुबे,पदमाकर तिवारी,जुगल किशोर तिवारी,सुरेन्द्र त्रिपाठी,इंद्रकुमार पांडे,गोपाल पाठक,अंकित तिवारी,अभिषेक परौहा, राजेश मिश्रा,संजू दुबे,देवेन्द्रधर बडगैंया,राजेश पटेल,प्रमोद बर्मन आदि भक्तों का सराहनीय योगदान रहा।

सेवानिवृत्त डिप्टी रेंजर ओमकार सोनी का स्वर्गवास

गोटेगांव, यशभारत। विगत दिवस नगर के प्रतिष्ठित नागरिक पटेल वार्ड के पूर्व पार्षद दीपक कुमार प्रशांतकुमार सोनी के परमपूज्य पिताश्री ओमकार सोनीजी (सेवानिवृत्त डिप्टी रेंजर) का 74 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया आप पार्षद श्रीमती अंजली सोनी के ससुरजी थे आप सहज सरल मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे ।

कांग्रेस भाजपा दोनों दलों में टिकट के दावेदारों की लंबी कतार

कुंडम, यशभारत। सिहोरा कुण्डम उम्मीदवारों के बीच में चुनावी गहमागहमी शुरू हो गई है, जनता अभी तक अपने पत्ते खोल रही थी वह भी अब धीरे से अपनी पसंद व नापसंद उमीदवार के नाम जाहिर करने लगी है। कांग्रेस भाजपा दोनो दलो में टिकिट में दावेदारों की लम्बी कतार तो है साथ ही सिहोरा विधानसभा की जनता से बात करने पर पता चलता है, कि अब मतदाता किसी नये और युवा चेहरे को देखना चाहती है जिसमे सिहोरा विधानसभा मे कुण्डम के (आमाटिटहा) टिटहा कला के युवा कार्यकर्ता एवं पंचायत सचिव राम लाल पुसाम का नाम तेजी से उभर रहा है। राम लाल पुसाम म.प्र.पंचायत सचिव संगठन में प्रदेश संगठन मंत्री पदाधिकारी एवं कुण्डम में आदिवासी युवाओं के बीच बिरसा मुण्डा जयंती का कार्यक्रम कर लोकप्रयिता भी प्राप्त कर चुके है और यही कारण है कि बेदाग छवि एवं युवा होने के साथ-साथ पढ़े लिखे नौजवानों में राम लाल पुसाम के प्रति रूझान देखा जा रहा है। लेकिन यह तो भविष्य के गर्त में है परंतु इतना तो तय है कि सिहोरा विधानसभा में इस बार जनता का फैसला चौकाने वाला होगा। भगवान की तरह शिवराज सिंह चौहान की होती है पूजा रामलाल पुसाम एक आदिवासी है ।

भारतीय हॉकी टीम का कमाल, एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में मलेशिया को 5-0 से चटाई धूल

नई दिल्ली, एजेंसी। एशिया के देश इस वक्त एशियन चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट में भिड़ रहे हैं। इस टूर्नामेंट में सबसे बड़ी दावेदार के रूप में उतरने वाली भारतीय टीम का शानदार प्रदर्शन जारी है। भारतीय टीम ने एक अहम मुकाबले में रविवार को मलेशिया के खिलाफ जीत हासिल कर अपना सेमीफाइनल का टिकट लगभग कटा लिया है। वहीं इस जीत के साथ टीम इंडिया टेबल में टॉप पर भी पहुंच गई है।

भारतीय हॉकी टीम का कमाल

जीत की राह पर वापसी करते हुए भारतीय हॉकी टीम ने मलेशिया को राउंड रॉबिन मैच में रविवार को 5-0 से हरा दिया। भारत के लिए इस मुकाबले में कार्ति सेल्वम (15वां मिनट), हार्दिक सिंह (32वां), कप्तान हरमनप्रीत सिंह(42वां), गुरजंत सिंह (53वां) और जुगराज सिंह (54वां) ने गोल दागे। इस जीत के बाद भारत तालिका में शीर्ष पर पहुंच गया है और सेमीफाइनल की राह भी अब आसान नजर आ रही है। भारत ने पहले क्वार्टर में काफी आक्रामक शुरूआत की और कई अच्छे मौके बनाए। पहले क्वार्टर के आखिरी मिनट में हरमनप्रीत सिंह मलेशियाई बॉक्स की तरफ गेंद लेकर दौड़े और सेल्वम को पास दिया जिसने आसान गोल दागा।

भारत ने खेली आक्रमक हॉकी

दूसरे क्वार्टर में भारतीयों ने हमले बोलने जारी रखे और दो पेनल्टी कॉर्नर भी बनाए लेकिन उन पर गोल नहीं हो सका। तीसरे क्वार्टर के दूसरे ही मिनट में हालांकि हार्दिक ने पेनल्टी कॉर्नर पर रिबाउंड शॉट के जरिए गोल दागा जबकि हरमनप्रीत अपने शॉट में चूक गए थे। मलेशिया को भी इस क्वार्टर में पेनल्टी कॉर्नर मिला और नजमी जजलान ने गोल भी कर दिया था लेकिन भारत ने वीडियो रेफरल लिया। खतरनाक फ्लिक होने के कारण यह गोल नहीं दिया गया। भारत को 42वें मिनट में लगातार तीन पेनल्टी कॉर्नर मिले जिनमें से तीसरे पर गोल हुआ। भारत का चौथा गोल गुरजंत ने 53वें मिनट में किया जिसकी नींव हार्दिक और मनदीप सिंह ने रखी। जुगराज ने अगले मिनट एक और गोल करके भारत की बढत पांच गोल की कर दी। भारत को अब गत चैम्पियन दक्षिण कोरिया से सोमवार को खेलना है जबकि मलेशिया की टक्कर जापान से होगी।

भगत और कदम ने चार देशों के पैरा बैडमिंटन टूर्नामेंट में जीता स्वर्ण

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया की नंबर एक पुरूष युगल टीम प्रमोद भगत और सुकांत कदम ने इंग्लैंड के शेफील्ड में चार देशों के पैरा बैडमिंटन अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में एसएल3 . एसएल4 वर्ग में स्वर्ण पदक जीता । भगत ने एकल एसएल3 वर्ग में भी रजत पदक हासिल किया । इसके अलावा मिश्रित युगल एसएल3 . एसयू5 वर्ग में मनीषा रामदास के साथ रजत पदक जीता। कदम ने एकल एसएल4 वर्ग में कांस्य पदक जीता। भगत और कदम ने भारत के ही दीप रंजन बिसोयी और मनोज सरकार को 21 . 17, 21 . 17 से हराकर स्वर्ण हासिल किया। एकल में भगत इंग्लैंड के डेनियल बेथेल से हार गए । मिश्रित युगल में भगत और रामदास को इंडोनेशिया के हिकमत रमदानी और लीनी रात्रि ने 21 . 17, 21 . 17 से हराया । भगत ने कहा ,'' युगल के नतीजे से मैं खुश हूं लेकिन एकल और मिश्रित युगल से नहीं । इस साल बेथेल ने मुझे काफी चुनौती दी है और उसे हराने के लिये खेल में सुधार करना होगा । कदम को सेमीफाइनल में इंडोनेशिया के फ्रेडी सेतियावान ने 17 . 21, 21 . 15, 21 . 16 से हराया। अन्य भारतीयों में कृष्णा नागर ने एसएच6 वर्ग में स्वर्ण जीता जबकि मानसी जोशी और टी मुरूगेसन ने महिला युगल एसएल3 . एसयू5 वर्ग में स्वर्ण हासिल किया। पारूल परमार और शांतिया विश्वनाथन ने भी इस वर्ग में पदक जीता । नित्याश्री ने महिलाओं के एसएच6 वर्ग में रजत पदक जीता जबकि पुरूषों के एसएल3. एसएल4 वर्गमें दीप रंजन और मनोज , चिराग बरेथा और राज कुमार विजयी रहे । रामदास ने महिलाओं के एसयू 5 वर्ग में कांस्य पदक जीता। कृष्णा नागर और नित्याश्री ने मिश्रित युगल एसएच6 वर्ग में कांस्य हासिल किया । प्रेम कुमार आले और तुर्की की एमिइन सेकिन ने मिश्रित युगल डब्ल्यूएच1 .डब्ल्यूएच2 वर्ग में कांस्य पदक जीता ।

मुख्य कोच एंडी फ्लावर के आरसीबी में शामिल होने पर एलएसजी के ट्वीट से प्रशंसकों में चर्चा होने लगी

नई दिल्ली, एजेंसी। जिम्बाब्वे के पूर्व बल्लेबाज द्वारा साथी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) फ्रेंचाइजी लखनऊ सुपर जाइंट्स को छोड़ने के फैसले के बाद रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर ने टीम प्रबंधन में एक बड़ा बदलाव करते हुए एंडी फ्लावर को मुख्य कोच के रूप में नियुक्त किया। यह बदलाव जल्द ही क्रिकेट जगत में चर्चा का विषय बन गया, प्रशंसकों ने विचार किया कि क्या फ्लॉवर आरसीबी को आईपीएल में नई ऊंचाइयों तक ले जाने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। ठ्स्र्ह्ल1.ष्थ्द्ब के अनुसार, बेंगलुरु की ओर से फ्लावर की नियुक्ति की घोषणा के बाद, एलएसजी ने भी ट्विटर का सहारा लिया और एक ट्वीट पोस्ट किया, जो इंटरनेट पर चर्चा का विषय बन गया। हम दुनिया भर में आईपीएल और टी20 टीमों को कोचिंग देने के एंडी के अनुभव का स्वागत करते हुए बेहद रोमांचित हैं, और अपनी टीमों को पीएसएल, आईएलटी20, द हंड्रेड और अबू धाबी टी10 में खिताब दिलाने का अनुभव चैंपियनशिप जीतने वाली मानसिकता विकसित करने और आरसीबी को त्त लेने में मदद करेगा। प्लेबोल्ड दर्शन को आगे बढ़ाएं, रॉयल चैलेंजर्स ने फ्लावर की नियुक्ति की घोषणा करते हुए ट्वीट किया। इसमें मजा आना चाहिए। ठीक हो जाओ, एंडी, एलएसजी ने ट्वीट किया। यहां देखें प्रशंसकों ने कैसे प्रतिक्रिया दी~फ्लावर ने कहा कि वह आईपीएल 2024 में आरसीबी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए उत्सुक हैं। मुझे आरसीबी में शामिल होने पर वास्तव में गर्व है। मैं माइक हेसन और संजय बांगड़ के काम को पहचानता हूं, जो दो कोच हैं जिनका मैं सम्मान करता हूं और मैं आरसीबी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की चुनौती के लिए तत्पर हूं। . फ्लावर ने इंग्लैंड क्रिकेट टीम के साथ भी लंबे और सफल जुड़ाव का आनंद लिया, जो 12 साल बाद अलग हो गए। जिम्बाब्वे को 2007 में पीटर मूर्स द्वारा इंग्लैंड का सहायक कोच नियुक्त किया गया था, उन्होंने दो साल बाद मुख्य कोच का पद संभाला और 2014 में उनके लिए वही भूमिका निभाई। फ्लावर के पास आईपीएल में व्यापक अनुभव है, इससे पहले उन्होंने एलएसजी और पंजाब किंग्स के साथ काम किया है। जिम्बाब्वे के पूर्व बल्लेबाज ने कहा कि वह आरसीबी के खिलाड़ियों, खासकर कप्तान फाफ डु प्लेसिस के साथ काम करने के लिए उत्सुक हैं। मैं फाफ के साथ फिर से जुड़ने के लिए विशेष रूप से उत्साहित हूं। हमने अतीत में एक साथ बहुत अच्छा काम किया है और मैं अपनी साझेदारी और रिश्ते को कुछ बड़ा और बेहतर बनाने के लिए उत्सुक हूं। हमारे पास काम करने के लिए खिलाड़ियों की एक रोमांचक सूची है, और मैं आरसीबी के साथ अद्भुत अवसर के साथ-साथ भूमिका के साथ आने वाली जिम्मेदारी को भी पहचानता हूं और उसका आनंद लूंगा। यह एक बड़ी चुनौती है और मैं इसे शुरू करने के लिए इंतजार नहीं कर सकता, फ्लावर ने कहा।

ब्रेट ली बनने वाले थे जीत के हीरो, लेकिन एंड्रयू फ्लिंटॉफ ने ऑस्ट्रेलिया को दी सबसे कड़वी हार

नई दिल्ली, एजेंसी। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच आज के दिन 2005 में एशेज सीरीज का संभवत~ सबसे शानदार और करीबी मुकाबला खेला गया था, जिसे क्रिकेट फैंस लंबे समय तक नहीं भूलेंगे। इस मैच में भरपूर ड्रामा और एक्शन था, जिसमें अंत में इंग्लैंड की जीत हुई। चलिए आपको इस मैच के बारे में विस्तार से जानकारी देते हैं। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच 2005 एशेज सीरीज के दौरान 4 अगस्त से बर्मिंघम में दूसरा टेस्ट मैच शुरू हुआ था। इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी की और मार्कस ट्रेस्कोथिक (90) व एंड्रयू फ्लिंटॉफ (68) की पारियों के सहारे पहली पारी में 407 रन बनाए। जवाब में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 308 रन पर सिमट गई।

इंग्लैंड का रहा दबदबा

इंग्लैंड ने इस तरह पहली पारी के आधार पर 99 रन की बढ़त हासिल की। फिर शेन वॉर्न (6 विकेट) और ब्रेट ली (4 विकेट) ने इंग्लैंड के परखच्चे उड़ाते हुए उसकी दूसरी पारी केवल 182 रन पर ऑलआउट कर दी। इस तरह ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए 282 रन का लक्ष्य मिला।

ब्रेट ली और वॉर्न ने फूंकी मैच में जान

इंग्लैंड के गेंदबाजों ने तीसरे ही दिन इंग्लैंड की जीत लगभग तय कर दी थी। 282 रन का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलिया ने तीसरे दिन स्टंप्स तक 175 रन पर आठ विकेट गंवा दिए थे। 7 अगस्त 2005 यानी चौथे दिन शेन वॉर्न (42) और ब्रेट ली (43*) ने मैच में जान फूंकी। दोनों ने 9वें विकेट के लिए 45 रन की साझेदारी की।

वो पल जो फैंस कभी नहीं भूलेंगे

शेन वॉर्न तब एंड्रयू फ्लिंटॉफ की गेंद पर हिटविकेट आउट होकर पवेलियन लौट गए। ऑस्ट्रेलिया जीत से 62 रन दूर था जबकि उसका आखिरी विकेट बचा था। ब्रेट ली और लास्ट मैन माइकल कास्प्रोविच (20) ने तय किया कि साझेदारी करके स्कोर को जितना हो सके आगे ले जाएंगे। दोनों ने आखिरी विकेट के लिए 59 रन की साझेदारी की। ऑस्ट्रेलिया की जीत लगभग तय नजर आ रही थी। मगर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। स्टीव हार्मिसन की गेंद पर कास्प्रोविच ने विकेटकीपर गेरांट जोंस को कैच थमा दिया और इंग्लैंड ने रोमांच से भरा मुकाबला 2 रन से अपने नाम किया। इस जीत के साथ इंग्लैंड ने पांच मैचों की सीरीज में 1-1 की बराबरी की। ऑस्ट्रेलिया ने पहला टेस्ट 239 रन के अंतर से जीता था। ऑस्ट्रेलिया की करीबी हार के बाद ब्रेट ली निराश होकर बैठ गए थे। इंग्लैंड की टीम जोरदार जश्न मना रही थी, लेकिन फिर एंड्रयू फ्लिंटॉफ कंगारू बल्लेबाज के पास गए और उनका हाथ पकड़कर उन्हें उठाया। फ्लिंटॉफ ने फिर ली को गले लगाया और खेल भावना का शानदार संदेश दिया। ली और फ्लिंटॉफ का यह फोटो व वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ।

रंग संसार

रूमर्ड बॉयफ्रेंड के साथ जा रही थीं दिशा पाटनी तभी भीड़ में किसी और ने ठीक की उनकी ड्रेस!

मुंबई, एजेंसी। बॉलीवुड की सबसे फिट एक्ट्रेस का जिक्र जैसे ही आता है, हर किसी के दिमाग में दिशा पाटनी का नाम जरूर आता है। एक्ट्रेस अपनी फिटनेस और जबरदस्त डांसिंग स्किल से हर किसी को दीवाना बना लेती हैं। एक्ट्रेस के फिगर की तारीफें करते लोग नहीं थकते हैं। आज कल एक्ट्रेस अपनी लव लाइफ को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। हाल में ही उन्हें उनके रूमर्ड बॉयफ्रेंड के साथ स्पॉट किया गया। इस वीडियो में वो भीड़ के बीच से निकल रही होती हैं कि तभी उनके साथ एक अजीब चीज होती है, जिस पर सभी की नजरें जा रही हैं।

भीड़ में किसी ने लिफ्ट की ड्रेस

सामने आए दिशा पाटनी के वीडियो में उन्होंने गोल्डेन शिमरी ड्रेस कैरी की है। उनकी ड्रेस काफी रिवीलिंग है। वो किसी इवेंट से बाहर आती नजर आ रही हैं, जहां उन्हें पैपराजी ने स्पॉट किया है। वीडियो में आप देख सकते हैं कि वो बालों को सही करते हुए किसी को बाय कह रही हैं। इसी बीच भीड़ में से दिशा पाटनी के पेट की ओर किसी का हाथ आता है, जो उनकी ड्रेस को ऊपर की ओर लिफ्ट करता है। इस वीडियो में ये साफ नहीं है कि ऐसा करने वाला शख्स आखिर है कौन।

लोगों ने किए अटपटे कमेंट्स

वीडियो देखने के बाद हर किसी की नजर दिशा पाटनी के इस ऊप्स मोमेंट की ओर जा रही हैं। लोगों की नजरों से ये वाकया बच नहीं सका है। वीडियो देखने के बाद एक शख्स ने कमेंट में लिखा, उसकी स्कर्ट किसी ने ऊपर सरका दी। वहीं एक ने लिखा, इनर वियर आज कल आउटर वियर बन गए हैं। वहीं कई लोग बॉयफ्रेंड को लेकर भी कमेंट कर रहे हैं। ऐसे कमेंट्स से कमेट बॉक्स भरा पड़ा है।

इन फिल्मों में आएंगी नजर

बात करें, दिशा की तो वो बीते दिनों अपने नए रूमर्ड बॉयफ्रेंड और टाइगर श्रॉफ को लेकर चर्चा में बनी हुई थीं। हाल में एक्ट्रेस को एक्स बॉयफ्रेंड टाइगर श्रॉफ के साथ स्पॉट किया गया था। दिशा पाटनी के वर्कफ्रंट की बात करें तो साउथ सुपरस्टार सूर्या संग फिल्म सूर्या 42 में काम कर रही हैं। इसके अलावा उनके पास करण जौहर की फिल्म योद्धा भी है। दिशा के साथ इस फिल्म में सिद्धार्थ मल्होत्रा और राशि खन्ना भी नजर आएंगे। वैसे दिशा पाटनी आखिरी बार एक विलेन रिटर्न्स में दिखाई दी थीं। इस फिल्म में उनके साथ जॉन अब्राहम और अर्जुन कपूर लीड रोल में नजर आए थे।

ओटीटी पर देखें मनोज बाजपेयी की ये धमाकेदार वेब सीरीज-फिल्में, कॉमेडी और एक्शन से हैं भरपूर

नई दिल्ली, एजेंसी। मनोज बाजपेयी की कई ऐसी वेब सीरीज और फिल्में हैं, जिन्हें इंटरनेशनल अवॉर्ड मिल चुका है। एक्टर मनोज बाजपेयी, गैंग्स ऑफ वासेपुर, सत्या, द फैमिली मैन और कई शानदार फिल्मों और वेब सीरीज में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। लोगों को एक्टर की अपकमिंग मूवी और सीरीज का बेसब्री से इंतजार रहता है। इस वीक को खास बनने के लिए आप मनोज बाजपेयी की ये धमाकेदार सीरीज और मूवी देख सकते हैं। मनोज बाजपेयी की वेब सीरीज द फैमिली मैन ने ओटीटी प्लेटफॉर्म पर खूब तहलका मचाया है। इसी सीरीज से एक्टर ने ओटीटी पर डेब्यू किया है। इस सीरीज के सारे सीजन सुपरहिट रहे हैं। मनोज बाजपेयी ने इस सीरीज में श्रीकांत तिवारी का किरदार निभाया है। इसे आप अमेजन प्राइम वीडियो पर देख सकते हैं। अनुराग कश्यप के निर्देशन में बनी गैंग्स ऑफ वासेपुर की कहानी और स्टार कास्ट लोगों को बहुत पसंद है। इस सीरीज में मनोज बाजपेयी ने सरदार खान का रोल प्ले किया था। इसके दो पार्ट रिलीज हो चुके हैं। मनोज बाजपेई, नवाजुद्दीन सिद्धकी, ऋचा चड्ढा और उम्दा एक्टर पियूष मिश्रा ने कमाल की एक्टिंग की। इस फिल्म के दोनों पार्ट आप अमेजन प्राइम और नेटफ्लिक्स पर देख सकते हैं। गुलमोहर में शर्मिला टैगोर, मनोज बाजपेयी, सिमरन, सूरज शर्मा, कावेरी सेठ, उत्सवी झा, जतिन गोस्वामी, चंदन रॉय और अमोल पालेकर ने शानदार एक्टिंग से सभी का दिल जीत लिया है। इसे आप डिज्नी+हॉटस्टार पर देख सकते हैं।

बैंकॉक में शॉपिंग कर के लौट रही कन्नड़ एक्टर विजय राघवेंद्र की पत्नी का निधन, सामने आई वजह

मुंबई, एजेंसी। कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री के पॉपुलर एक्टर विजय राघवेंद्र की पत्नी की अचानक मौत हो गई। इस खबर से कन्नड़ इंडस्ट्री में शोक व्याप्त है। बताया जा रहा है कि विजय राघवेंद्र की पत्नी स्पंदना की मौत हार्ट अटैक की वजह से हुई है। वो छुट्टियां मनाने बैंकॉक गई हुई थीं, वहीं शॉपिंग से रूम लौटते वक्त एक्ट्रेस को दिल का दौरा पड़ा, जिसके बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

फैमिली के साथ छुट्टियां मना रही थीं स्पंदना

बैंकॉक में निधन होने की वजह से उनका पार्थिव शरीर आने में वक्त लग रहा है। कहा जा रहा है कि कल यानी मंगलवार को उनका पार्थिव शरीर बेंगलुरु पहुंचेगा। बताया जा रहा है विजय राघवेंद्र की पत्नी स्पंदना फैमिली वेकेशन पर बैंकॉक गई थीं। अचानक मौत होने से एक्ट्रेस का परिवार सदमे में है।

स्पंदना ने इस फिल्म में किया था काम

एक्टर विजय राघवेंद्र की पत्नी स्पंदना ने फिल्मों में भी काम किया था। वो एक कैमियो रोल में नजर आ चुकी हैं। उनका ये गेस्ट रोल रविचंद्रन की फिल्म अपूर्वा में देखने को मिला था। इसी महीने राघवेंद्र और पत्नी स्पंदना अपनी 16वीं सालगिराह मनाने वाले थे। दोनों ने साल 2007 में शादी की थी और दोनों का एक बेटा भी है, जिसका नाम शौर्य है।

विजय राघवेंद्र को मिल चुका है नेशनल अवॉर्ड

बता दें, चिन्नारी मुथा में एक्टर विजय राघवेंद्र के रोल को लोगों ने काफी पसंद किया। सैंडलवुड में एक्टर के इस रोल को काफी सराहा गया और इसी फिल्म के लिए विजय राघवेंद्र को नेशनल अवॉर्ड भी मिला है।

» न्यूज गैलरी

नेपियर टाउन डकैती मामले में पुलिस के हाथ खाली

दूसरे राज्यों में भेजी गई टीमें

जबलपुर, यश भारत। करीब 09 दिनों की जांच पड़ताल के बाद पुलिस के हाथ कोई पुख्ता जानकारी नहीं लगी है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नेपियर टाउन में आटो पार्टस व्यापारी के बंगले पर हुई डकैती के मामले में पुलिस अब पीड़ित परिवार द्वारा दी गई जानकारी के अतिरिक्त कुछ भी ठोस नहीं जुटा पाई है। फिलहाल थ्योरी यही है कि बांग्लादेशी और बिहारी गैंग के गठजोड़ में पेशेवर आरोपियों ने इस वारदात को अंजाम दिया है। हालांकी पुलिस मामले को समझने और सुलझाने के हर संभव प्रयास में जुट हुई है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पुलिस की चार टीमें अलग अलग राज्यों में भेजी गई है। वहीं सायबर सेल वारदात के समय सक्रीय करीब 05 मोबाईल खंगाल रही है। साथ ही नेफिस साफ्टवेयर की भी मदद ली जा रही है। बताया जा रहा है कि दूसरे राज्यों से कुछ इनपुट मिला है जिसके आधार पर दो टीम को भेजा गया है। अपराधी सतर्क न हो जाए इसलिए किसी तरह की जानकारी का खुलासा नहीं किया जा रहा है। पुलिस अधिकारी का दावा है कि जल्द कुछ ठोस जानकारी मिलने की उम्मीद है।

असामाजिक तत्वों के खिलाफ कार्यवाही

जबलपुर,यश भारत । जिले में पिछले 24 घंटे में आदतन अपराध करने वाले 28 आरोपियों के विरूद्ध धारा 110 जा.फौ. के तहत, तथा वाद विवाद करने वाले 59 व्यक्तियों के विरूद्ध 107/116 जा.फौ. के तहत, एवं 6 व्यक्तियो के विरूद्ध धारा 151 जा.फौ. के तहत की गयी है, इसी प्रकार पिछले कई वर्षो से फरार 6 गैरम्यादी, 106 म्यादी वारंटी, को गिरफ्तार किया गया है तथा 9 व्यक्तियों के विरूद्ध 34 आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही करते हुये 33 पाव देशी/अंग्रेजी एवं 27 लीटर कच्ची शराब, जप्त की गयी तथा 8 जुआडियों को जुआ खेलते हुये रंगे हाथों पकडा गया जुआडियो के कब्जे से 3550 रूपये जप्त किये गये।

युवक फांसी झूला

जबलपुर, यश भारत। गोसलपुर थानांतर्गत देवनगर गोसलपुर में एक युवक ने कमरा बंद कर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सुबह युवक के देर तक नहीं उठने पर परिजनों ने साकल धक्का देकर खोली तो युवक फांसी के फंदे पर मृत हालत में लटका मिला। शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम हेतु भिजवाते हुए मर्ग कायम कर जांच में लिया गया।

अस्पताल प्रबंधन ने दर्ज कराई शिकायत

केंद्रीय रेलवे अस्पताल से लाखों के इंजेक्शन चोरी

जबलपुर। यश भारत । केंद्रीय रेलवे अस्पताल के स्टोर रूम में रखें विभिन्न बीमारियों के इंजेक्शन चोरी होने की खबर से अस्पताल प्रबंधन की इस चूक ने यहां की सुरक्षा पर अनेक सवाल खड़े कर दिए 5 अगस्त के पूर्व हुई इस घटना की शिकायत अस्पताल प्रबंधन द्वारा आरपीएफ में की गई है। इसके बाद आरपीएफ द्वारा चोरी की घटना से तमाम बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए इसकी जांच शुरू कर दी है।

इस संबंध में रेलवे सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक केंद्रीय रेलवे अस्पताल के स्टोर रूम में

सीसीटीवी फुटेज खंगालने में लगी आरपीएफ

करीब 5-30 लाख का इंजेक्शन चोरी होने की खबर से कर्मचारियों में हड़कंप की स्थिति निर्मित हो गई है। इस संबंध में मिली जानकारी के मुताबिक 5 अगस्त को जब स्टोर रूम में रखे इंजेक्शनों का मिलान किया गया तो उसमें से भारी तादाद में इंजेक्शन कम पाए गए। इधर आरपीएफ द्वारा अस्पताल प्रबंधन की शिकायत के बाद उसने घटना की पड़ताल करते हुए चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपियों पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया।

जमुनिया गांव रेलवे फाटक से परेशान ग्रामीण बोले- 12 घंटे रहता है बंद

जबलपुर यशभारत। भेड़ाघाट स्थित ग्राम जमुनिया के सैकड़ों लोग रेलवे की कार्यप्रणाली से नाराज हैं। दरअसल ग्रामीणों का कहना है कि गांव के नजदीक में बना रेलवे फाटक 24 घंटे में 12 घंटे खुला रहता है, जबकि 12 घंटे बंद रहता है। ग्रामीणों के आने-जाने के लिए मात्र एक रास्ता है। जिस रेलवे फाटक में एक व्यक्ति को तैनात किया गया है। बावजूद इसके रेल फाटक बंद होने के दौरान मजबूरी में ग्रामीणों को फाटक के नीचे से गुजरना पड़ता है। मेडिकल और आवागमन जैसी तमाम मूलभूत सुविधाओं से फाटक बंद होने के कारण वंचित रहना पड़ता है। वहीं मजबूरी में इस दौरान कई लोग हादसे का भी शिकार हो चुके हैं। ग्रामीण शिव प्रसाद पटेल का कहना है इसके

नहीं सुनते रेलवे अधिकारी

पहले भी विधायक सहित जनप्रतिनिधियों और रेलवे अधिकारियों से मिलकर पत्राचार किया जा चुका है। बावजूद इसके गांव की समस्या का हल नहीं हो पा रहा है। जिसके कारण सैकड़ों ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया इस परेशानी को लेकर दर्जन ग्रामीण पश्चिम मध्य रेलवे के महाप्रबंधक से मिलने पहुंचे थे, इस दौरान ग्रामीण जबलपुर सांसद राकेश सिंह का पत्र भी लिए हुए थे लेकिन महाप्रबंधक या अन्य रेल अधिकारी ग्रामीणों से मिलने अपने चेंबर से बाहर नहीं आए। जिसके बाद ग्रामीणों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया और महाप्रबंधक के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। ग्रामीणों ने 7 दिन का रेलवे अधिकारियों को अल्टीमेटम दिया है। उनका कहना है यदि 7 दिन के भीतर ग्रामीणों की परेशानी का हल नहीं निकाला गया। तब भेड़ाघाट सड़क में चक्का जाम किया जाएगा और शासन-प्रशासन के सामने अपनी बात रखी जाएगी। बावजूद इसके किसी प्रकार का हल नहीं निकलता हैं, तब सैकड़ों की संख्या में पश्चिम मध्य रेलवे के कार्यालय पहुंचकर ग्रामीण प्रदर्शन करेंगे और रेल रोकने का काम करेंगे।

फरार वारंटियों पर ईनाम की घोषणा

जबलपुर,। थाना शहपुरा अंतर्गत फरार वारंटियों की गिरफ्तारी पर एसपी द्वारा इनाम की घोषणा की गई है। घोषणा में कहा गया है कि आरोपियों की सूचना देने वाले या गिरफ्तारी मे सहयोग प्रदान करने वाले को पुरस्कार दिया जाएगा। थाना शहपुरा के धारा 457, 380, 34 भादवि के प्रकरण में संजीवनी नगर निवासी 32 वर्षीय आरोपी सतीष पिता दुर्गा प्रसाद झारिया पर 3 हजार रुपए, धारा 294, 427, 506, 34 भादवि के आरोपी मगरमुहा, शहपुरा निवासी 26 वर्षीय आरोपी राकेश गोटिया पिता सोनीलाल गोटिया पर 2 हजार रुपए, धारा 454,323 भादवि के आरोपी पंचमपुरा कटंगी निवासी 26 वर्षीय मोहन झारिया पिता मुन्ना उर्फ दुलीचंद झारिया पर 2 हजार रुपए एवं धारा 294, 323,279, 337,34 भादवि के आरोपी ठूठा, शहपुरा निवासी 24 वर्षीय धर्मेन्द्र सिंह पिता रामवरन सिंह राजपूत पर 1 हजार रुपए के ईनाम की घोषणा की गई है।

तीखी बात

राजनिति में अपने -अपने दांव 'एकला' चल दिए पूर्व मंत्री जी

राजीव उपाध्याय

राजनीति में सब अपने अपने दांव लगाते हैं।जब चुनाव का मौसम हो तो फिर दांव भी ऐसे लगते हैं कि जमीन हिल जाए। पश्चिम विधानसभा क्षेत्र में इन दिनों दांव पर दांव लग रहे हैं। जहां एक ओर पूर्व मंत्री अपना दांव लगा रहे हैं वहीं पूर्व आईएएस अधिकारी भी अपना दांव लगा रहे हैं।इन दिनों राजनीति के गलियारों में इन दांव की बहुत चर्चा है। पूर्व आईएएस अधिकारी ने पश्चिम विधानसभा क्षेत्र में बकायदा जनता के साथ मिलकर काम भी शुरू कर दिया है,वो फिर नर्मदा के घाट की सफाई हो या,मतदाता सूची का काम लेकिन लीक से हटकर तो इस क्षेत्र में पूर्व मंत्री काम कर रहे हैं। पूर्व मंत्री अकेले ही खुद का प्रचार करने निकल पड़े। संघठन के एक पदाधिकारी पर ये भड़ास निकालते हुए उन्हें सीधेतौर पर पिछले चुनाव में अपनी हार का जिम्मेदार मानते हैं। वहीं ये पदाधिकारी भी इन पर अपनी भड़ास निकाल रहे हैं। दोनों के बीच वाक युद्ध चल रहा है। वैसे बीजेपी में कभी एकला चलो की स्थिति नहीं बनी लेकिन पूर्व मंत्री जिस तरह से खुद के लिए सक्रिय हैं इससे तो यही लगता है कि जैसे कि पूर्व मंत्री ने मान लिया है कि इस क्षेत्र से इनको ही टिकट मिलेगी। वरिष्ठों को नाराज करने के बाद भी इनको कांफिडेंस बहुत है। पार्टी लाइन से अलग हटकर चलने की हिम्मत तो बीजेपी में किसी नेता में नहीं है। अब यदि ये हिम्मत दिखा रहे हैं तो सवाल ये उठता है कि इनको हिम्मत कौन दे रहा है। ऐसा लगता है कि इन्होंने चुनाव लड़ने की ठान ही ली है,भले ही पार्टी टिकट दे या न दे। संघठन तो कह रहा है कि जनता के बीच जाना है तो हमारे प्रोग्राम के अनुसार चलिए अपनी टेम्पो अलग से क्यों चला रहे हैं।बरहाल कांग्रेस दूर से फिलहाल तमाशा देख रही है क्योंकि बीजेपी में ऐसा दृश्य देखने मिलता नहीं है। वैसे भी राजनीति में दांव तो लगते ही रहते हैं।

हाई कोर्ट का आदेश

दीनदयाल अंत्योदय रसोई योजना में सभी निविदाकारों से पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन कराएं

जबलपुर यशभारत । हाई कोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण आदेश में व्यवस्था दी कि दीनदयाल अंत्योदय रसोई योजना में सभी निविदाकारों से पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन कराएं और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले को चुनें। न्यायमूर्ति विवेक अग्रवाल की एकलपीठ ने यह पूरी प्रक्रिया 15 दिन में पूरी करने के निर्देश दिए हैं। इसी के साथ डिस्ट्रिक्ट अर्बन डेवलपमेंट अथारिटी, कटनी के उस आदेश को अवैधानिक करार दिया जिसमें लाटरी सिस्टम के जरिए चयन कर ठेका आवंटन किया गया था। याचिकाकर्ता नव ज्योति शिक्षा समिति, सतना की ओर से अधिवक्ता एचआर नायडू व नितिन सिंह ठाकुर ने पक्ष रखा। उन्होंने ठेका आवंटन को चुनौती देते हुए दलील दी कि कटनी में गलत प्रक्रिया के तहत ठेका प्रदान किया गया है। ठेका देने में नियमों में अनदेखी की गई।

उन्होने बताया कि नियमानुसार पहले एक कमेटी गठित की जानी चाहिए थी। उक्त कमेटी स्थल का निरीक्षण करती फिर मेरिट के आधार पर रसोई का ठेका दिया जाना चाहिए था। लेकिन कटनी में ऐसा नहीं करते हुए महज लाटरी के आधार पर ठेका का आवंटन कर दिया गया। हाई कोर्ट को अवगत गया कि 14 मार्च, 2023 को रघुकुल समिति को ठेका दिया गया है।

घरेलू गैस से चलाई जा रही थी वैन आरटीओ ने जब्त कर की कार्रवाई

जबलपुर यश भारत। आरटीओ ने आज बरेला बाईपास से एक वैन को जप्त कर कार्रवाई को अंजाम दिया दरअसल वैन संचालक घरेलू गैस से वाहन संचालित कर स्कूल के बच्चों को ढो रहा था वाहन को थाने में खड़ा किया गया है मामले की जांच जारी है। जानकारी अनुसार आरटीओ को आज जानकारी मिली की वैन क्रमांक एमपी 20सीजी 1287 मैं स्कूली बच्चों को धनपुरी से जबलपुर ले जाया जा रहा है जो घरेलू गैस से संचालित हो रही है जिसके बाद आरटीओ ने वाहन रोककर वैन संचालक पंकज श्रीपाल के खिलाफ कार्रवाई कर वाहन को बरेला थाने में खड़ा करवा दिया मामले की जांच जारी हैं।

चंदन तस्करी गैंग का मुख्य सरगना फरार

दूसरे राज्यों में फैला है नेटवर्क गठित टीमें गोटेगांव से लौटी खाली हाथ

जबलपुर यश भारत। शाहपुरा में वन विभाग के अमले ने 200 किलो चंदन की लकड़ी जप्त कर 3 आरोपियों को दबोचा था लेकिन गिरोह का सरगना मौके से फरार हो गया जिसे तलाशने टीमें गठित की गई हैं। वही सूचना के बाद गोटेगांव पहुंची फोर्स खाली हाथ ही लौट आई बताया जा रहा है कि गिरोह का नेटवर्क दूसरे राज्यों में फैला हुआ है जिसके बाद मामले की बारीकी से जांच की जा रही है। रेंजर अपूर्व शर्मा ने पूरी जानकारी देते हुए बताया कि शाहपुरा में चंदन लकड़ी की डीलिंग के दौरान आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था। पूछताछ के दौरान आरोपियों ने गैंग के मुख्य सरगना की जानकारी दी थी जिसके चलते टीमें गठित कर युद्ध स्तर पर तलाशी की जा रही थी। आरोपी के गोटेगांव में छिपे होने की सूचना मिली लेकिन कार्रवाई की भनक लगते ही आरोपी मौके से फरार हो गया है जिस की पतासाजी की जा रही है।

टीएफआर आई में नहीं लगा सुराग

भारतीय अनुसंधान केंद्र ग्वारीघाट और टी एफ आर आई गौर में चंदन तस्करी का बड़ा मामला सामने आया था। दोनों ही मामलों में वन विभाग की टीम युद्ध स्तर पर आरोपियों को दबोचने के लिए जुटी है लेकिन अभी तक टीम के पास आरोपियों का एक भी सुराग नहीं है। बताया जा रहा है कि जबलपुर में चंदन तस्करी को लेकर एक पूरी गैंग सक्रिय है जिसका नेटवर्क अन्य राज्यों में फैला हुआ है। अब नेटवर्क को ध्वस्त करने वन विभाग की टीम साइबर पुलिस की भी मदद ले रही है।

पानी के विवाद पर अधिवक्ता के परिवार के साथ मारपीट

जबलपुर, यशभारत। गढा में पीने का पानी भरने को लेकर के एक अधिवक्ता के साथ मारपीट की घटना सामने आई है।

इतना ही नहीं वकील के परिवार को भी आरोपियों ने नहीं बख्शा और उनके साथ भी मारपीट की। जिसके चलते वो भी घायल हो गए, घटना की सूचना पीड़ितों द्वारा गढ़ा थाने पहुंचकर पुलिस को दी। पूरे मामले की जानकारी देते हुए गढ़ा थाने में पदस्थ उप निरीक्षक कोमल सिंह ने बताया कि, त्रिवेणी बिहार अपार्टमेंट में अधिवक्ता मयूर गुलाटी रहते हैं, उन्हीं के अपार्टमेंट में रहने वाले अभिषेक श्रीवास्तव और साथ में दो अन्य और तीन महिलाओं ने अपार्टमेंट के नीचे, जब मयूर गुलाटी सपना पानी भर रहे थे तभी वे पानी को लेकर विवाद करने लगे। इसी बीच महिलाएं भी आ गयी और उन्होने अधिवक्ता गुलाटी के मुंह पर चप्पले मारना शुरू कर दिया। इसी बीच अभिषेक और उसके दो अन्य साथियों ने अधिवक्ता पर जमकर लात, घूंसों की मार शुरू कर दी। मारपीट की आवाज सुनकर परिवार के लोग भी आ गये और बीच बचाव करने लगे, तो उनके साथ भी मारपीट शुरू कर दी और धमकी देते हुए फरार हो गये। पुलिस ने मामला दर्ज कर फरार आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

पुलिस ने मामला दर्ज किया आरोपी फरार

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक आशीष शुक्ला द्वारा मां रेवा पब्लिकेशन एण्ड प्रिंटर्स 68/1 लक्ष्मीपुर, विवेकानंद वार्ड मुस्कान प्लाजा के पीछे MR-4 रोड उखरी जबलपुर से मुद्रित एवं जेडीए योजना क्रमांक 11 सेकेण्ड फेस, शताब्दीपुरम, विवेकानंद वार्ड, जबलपुर से प्रकाशित। स्थानीय सम्पादक राजीव उपाध्याय, संपादक अम्बरीष तिवारी*, सलाहकार संपादक श्याम कटारे RNI No. MPHIN/2007/18675। फोन-2643333 email - jabalpur@yashbharat.com। (*पी.आर.बी.एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। डाक पंजीयन क्रं. एसएसपी/ जबलपुर/26/2022-24 (न्यायालयीन क्षेत्राधिकार जबलपुर)